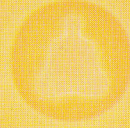


कर्मातीत अवस्था



प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय

इस पुस्तिका में प्रकाशित ज्ञान-रत्नों को
1969 से 2003 तक की अव्यक्त वाणियों से
संकलित किया गया है।

प्रेरणा स्रोत :

ब्रह्माकुमार जगदीश चन्द्र जी

प्रथम मुद्रण :

24 जून, 2003

'मातेश्वरी स्मृति-दिवस'

द्वितीय मुद्रण: जनवरी, 2004

प्रकाशक एवं मुद्रक :

ब्रह्माकुमार आत्म प्रकाश,

साहित्य विभाग, ज्ञानामृत भवन,

शान्तिवन, आबू रोड - 307 510

e-mail: gyanamrit@vsnl.com

© कॉपी राइट :

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय

पाण्डव भवन, आबू पर्वत - 307 501

राजस्थान, भारत

दो शब्द

हम सभी ब्रह्मा-मुख-वंशावली ब्राह्मणों की आध्यात्मिक यात्रा का अन्तिम लक्ष्य कर्मातीत स्थिति की प्राप्ति है। कर्मातीत का अर्थ है – सर्व प्रकार के हृद के स्वभाव-संस्कार से अतीत अर्थात् न्यारे-प्यारे। ब्रह्मा बाबा ने 33 वर्षों की निरन्तर तपस्या के द्वारा इस स्थिति को प्राप्त किया और अब शिव पिता के समान बन विश्व-सेवा का पार्ट बजा रहे हैं। बाबा का कर्मातीत बनने का पुरुषार्थ अति सहज रहा। बच्चों से अटूट स्नेह होते भी अन्त समय कोई याद नहीं आया। जितने बच्चों के प्यारे थे उतने ही न्यारे होने में एवररेडी रहे। बुलावा आया और तुरन्त गये। न वस्तु, न वैभव, न व्यक्ति, किसी को सहारा न बनाकर एक ही अविनाशी सहारे के आधार पर कर्मातीत हो गए। हमें भी प्यारे बाबा के पदचिह्नों पर चलकर कर्मातीत स्थिति को अवश्य प्राप्त करना है और प्यारे शिव बाबा के साथी बन घर जाने की वापसी यात्रा करनी है।

कर्मातीत स्थिति के समीप पहुँची हुई आत्मा, बोलचाल में उपराम तथा स्थिति में सदा ऊपर अनुभव होगी। उसे देह और देही की भिन्नता स्पष्ट अनुभव होगी तथा बात करते-करते न्यारापन खींचेगा। कर्मातीत स्थिति में बुद्धि में वही संकल्प आयेगा जो उचित होगा। कार्य स्वतः होता रहेगा पर कर रहे हैं, यह स्मृति नहीं रहेगी। कार्य या कर्मभोग अपनी तरफ आकर्षित नहीं करेगा। सर्व व्यक्त आकर्षणों से परे, आवाज़ से परे यह ऐसी शक्तिशाली और न्यारी-प्यारी स्थिति है जिसमें सेकण्ड भर स्थित होने पर, उसका प्रभाव सारा दिन विशेष शान्ति की शक्ति के रूप में अनुभव होता रहेगा। प्यारे शिव बाबा का वरदान है कि ऐसी अवस्था हरेक ब्राह्मण आत्मा की होनी ही है।

इसके लिए प्रथम पुरुषार्थ है कि 'मैं-पन' का दरवाजा पूरी तरह बन्द हो, कर्म बन्धन में बांधने वाली माया इसी दरवाजे से प्रवेश करती है। इस दरवाजे को बन्द करने का तरीका है डबल रूप से करावनहार की स्मृति। एक तो बाप करावनहार है और दूसरा मैं आत्मा भी इन कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म कराने वाली हूँ, इससे कर्म करते भी उसके अच्छे-बुरे प्रभाव से मुक्त रहते हैं।

यज्ञ स्थापना के प्रारम्भ में प्यारे ब्रह्मा बाबा के सम्पूर्ण स्वरूप और भविष्य के श्रीकृष्ण स्वरूप, दोनों का साक्षात्कार साथ-साथ होता था। कर्मातीत स्थिति के समीप

पहुँचने पर ब्राह्मण आत्मा के भी वर्तमान फ़रिश्ता रूप और भविष्य के राज्यपद का साक्षात्कार होता रहेगा। निरन्तर अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति होती रहेगी।

ज्यों-ज्यों समाप्ति का समय समीप आता जा रहा है त्यों-त्यों वातावरण तथा वायुमण्डल की हलचल, व्यक्तियों की हलचल, सम्बन्धों की हलचल और आवश्यक साधनों की प्राप्ति की हलचल बढ़ती ही जा रही है। इन सबके बीच अचल रहने वाली आत्मा ही कर्मातीत स्थिति को प्राप्त करेगी। इसलिए छोटी-छोटी ग़लतियाँ, जो संकल्पों में होती हैं, उन पर भी डबल अटेन्शन रहे। इसके लिए निमित्त मात्र कार्यार्थ लाइट का चोला धारण करो और पुनः आत्मिक स्वरूप में टिक जाओ। हरेक को अपनत्व की भासना देते हुए सर्व के स्नेही, सहयोगी बनकर रहो। हदों को जीतने वाले विजयी रत्न बनो। प्यारे ब्रह्मा बाबा ने अपनी कर्मेन्द्रियों की नित्य दरबार लगाई और सब कर्मचारियों के कार्य का निरीक्षण किया, इसमें फ़ालो फ़ादर करो।

लौकिक विद्या में भी अन्तिम परीक्षा में पूछे जाने वाले प्रश्नों को विद्यार्थी बार-बार पढ़ता और दोहराता है। इसी प्रकार, यह पुस्तक भी कर्मातीत स्थिति रूपी अन्तिम पेपर को पार करने की बहुत सुन्दर विधियाँ बताती है। इसको बार-बार पढ़ने से आत्मा इन विधियों का स्वरूप बन जायेगी। पाठक भाई-बहनों से प्यार भरा अनुरोध है कि वे अब समय के शंखनाद को सुनते हुए कर्मातीत स्थिति की धुन लगा दें, तभी बापदादा की पलकों पर बिठाकर ले चलने की आस साकार हो सकेगी।

शुभकामनाओं के साथ

बि. कु. प्रकाशमणी

(बि. कु. प्रकाशमणी)

विषय सूची

दो शब्द	3
प्रस्तावना :	
देहातीत, संसारातीत और इन्द्रियातीत बनना ही कर्मातीत अवस्था है	9
कर्मातीत अवस्था	15
1. कर्मातीत अवस्था का अर्थ और परिभाषा	16
1.1. अतीत अथवा न्यारापन का अनुभव ही कर्मातीत अवस्था है।	16
1.2. कर्मातीत अर्थात् अभी-अभी शरीरधारी और अभी-अभी शरीर से परे। ...	18
1.3. इच्छा मात्रम् अविद्या की स्थिति ही कर्मातीत अवस्था है।	19
1.4. कोई कर्मभोग व कर्म अपनी तरफ आकर्षित नहीं करेगा, इसी को कर्मातीत स्टेज कहा जाता है।	20
1.5. कर्मातीत अवस्था अर्थात् कर्मों के अधीन नहीं, कर्मों के परतन्त्र नहीं।	20
1.6. सर्व व्यक्त आकर्षणों से परे इसी स्थिति को कर्मातीत स्थिति कहा जाता है। .	21
1.7. सर्व बन्धनों से मुक्त रहना ही कर्मातीत अवस्था है।	21
1.8. कर्म के बन्धनों से मुक्त अवस्था ही कर्मातीत अवस्था है।	22
1.9. सहारा एक ही अविनाशी सहारा हो; न व्यक्ति का, न वैभव वा वस्तु का सहारा हो, इसको ही कर्मातीत कहते हैं।	23
1.10. सर्व हिसाब-किताब से भी मुक्त अवस्था है कर्मातीत अवस्था।	23
2. कर्मातीत अवस्था का विषय-विस्तार	24
3. कर्मातीत अवस्था के लक्षण	26
3.1. देखने वालों को डबल साक्षात्कार होते रहेंगे	26
3.2. सर्व बातों में समानता आती रहेगी	26
3.3. आवाज़ से परे शान्त स्वरूप की स्थिति अधिक प्रिय लगेगी	27
3.4. इष्ट देवात्मा के संस्कार इमर्ज रहेंगे	27
3.5. डबल पार्ट बजायेंगे	28
3.6. कर्मयोगी बन कर्मभोग चुक्तु करेंगे	28
3.7. योग में मगन अवस्था प्राप्त होगी और विघ्न-विनाशक हो रहेंगे	30
3.8. हर आत्मा को यथार्थ रूप से पहचानेंगे	30

3.9. कभी नाराज़ नहीं होगा	31
4. कर्मातीत अवस्था से लाभ	32
4.1. कम खर्चा बाला नशीन	32
4.2. अन्तःवाहक शरीर सैर करने का वाहन बन जायेगा	32
4.3. संगमयुग पर निराकार बाप समान कर्मातीत, निराकारी स्थिति का अनुभव होगा और 21 जन्म ब्रह्मा बाप समान सर्वगुण सम्पन्न, सम्पूर्ण निर्विकारी श्रेष्ठ जीवन का अनुभव होगा	33
4.4. सेवा फास्ट होगी	33
5. कर्मातीत बनने में आने वाली बाधाएँ	34
5.1. हृद का सहारे का भरोसा	34
5.2. सेवा-साथी का सहारा	35
5.3. साकार साधनों का सहारा	36
5.4. रॉयल धागों को जानो, सोनी हिरण को नहीं चाहो	37
6. कर्मातीत बनने के लिए क्या पुरुषार्थ करें?	37
6.1. इन स्मृतियों में रहो	37
6.2. मंज़िल अथवा निशााना सदा सामने रखो	38
6.3. कर्म की गुह्य गति जान कर अर्थात् त्रिकालदर्शी बन कर हर कर्म करो	39
6.4. हलचल में भी अचल रहो	40
6.5. ईश्वरीय नशे में रहो	41
6.6. चलते-फिरते लाइट-हाउस का अनुभव करो	41
6.7. डबल लाइट बन कर रहो	42
6.8. पूरा मरजीवा बनो	43
6.9. अनादि-आदि स्वरूप में स्थित रहो	43
6.10. जगतमाता का अनुभव कराओ	44
6.11. कर्मेन्द्रियजीत बनो	44
6.12. सर्व हदों से पार, बेहद स्वरूप में रहो	45
6.13. अब से एवररेडी रहने का अभ्यास करो	46
6.14. बिन्दु बनना और बिन्दु बाप से सर्व सम्बन्धों का मिलन मनाओ	46

6.15. मालिक और बालक बनने का पक्का अभ्यास करो	47
6.16. रोज दरबार लगाओ	48
6.17. बहुत काल का अभ्यासी बनो	48
6.18. प्लान बनाओ	49
6.19. भक्तों की पुकार सुनो, उन पर रहम करो	50
6.20. अपने पुरुषार्थ के मार्ग में यह चेकिंग करते रहो	50
7. कर्मातीत बनने के लिए अन्य सहायक अवस्थाएँ	53
7.1. कर्मयोगी स्थिति	53
7.1.1. कर्मयोग का अर्थ	53
7.1.2. कर्मयोगी के लक्षण	57
7.1.2.(1) न्यारा और प्यारा रहेगा	57
7.1.2.(2) सदा खुशी और शक्ति का अनुभव करता रहेगा	58
7.1.2.(3) कर्म करते हुए भी लवलीन स्थिति का अनुभव करेगा	58
7.1.2.(4) डबल फोर्स से कार्य करता रहेगा	59
7.1.2.(5) हर कर्म में स्वतः ही सफलता को प्राप्त करता है	59
7.1.2.(6) हर कार्य मनोरंजन और सहज अनुभव होगा	59
7.1.2.(7) हर कर्म योगयुक्त और युक्तियुक्त होगा	60
7.1.3. कर्मयोगी बनने के लिए पुरुषार्थ	60
7.1.3.(1) पहला पाठ पक्का करो	60
7.1.3.(2) जितना काम है उतना ही बोले	61
7.2. न्यारे और प्यारे की अवस्था	61
7.3. साक्षी स्थिति	63
7.4. बैलेन्स की स्थिति	63
7.5. निमित्त भाव	65
7.6. तुरन्त फुलस्टॉप लगाने का अभ्यास	65
7.7. उड़ती कला	66

7.8. सन्तुष्टता की अवस्था	67
7.9. योग में मगनावस्था	68
7.10. समानता में समीप	68
8. कर्मातीत बनने के लिए आवश्यक शक्तियाँ	69
8.1. समाने और समेटने की शक्ति	69
8.2. कर्तोरिंग पॉवर	71
8.3. परखने की शक्ति	72
9. कर्मातीत अवस्था कब बनेगी?	73
10. कर्मातीत अवस्था का	
अनोखा दृष्टान्त और आदर्श साधक	74
10.1. आदिदेव ब्रह्मा	74
10.2. साकार ब्रह्मा	74
10.3. अव्यक्त ब्रह्मा	76



देहातीत, संसारातीत और इन्द्रियातीत बनना ही कर्मातीत अवस्था है

ज्ञानी वो है जो अपने परम लक्ष्य को प्राप्त करता है। ब्राह्मण-जीवन का परम लक्ष्य ही है- कर्मातीत अवस्था को प्राप्त करना। कर्मातीत अपने एक-एक अंग-प्रत्यंग भगवान को समर्पित किया रहता है। कर्मातीत इन्द्रियातीत और इन्द्रियातीत होता है। इसलिए उसको “इन्द्र” भी कहते हैं। “इन्द्र” शब्द की संस्कृत व्याख्या है “जो इन्द्रियजीत है वह इन्द्र है।” शास्त्रों में ब्रह्मा जी का एक नाम “इन्द्र” है क्योंकि ब्रह्मा जी इन्द्रियजीत भी थे और उन्होंने अपनी सर्व इन्द्रियों को भगवान को दे दिया था। इसलिए कर्मातीत बनने के लिए सब से पहले अपनी सर्व कर्मेन्द्रियों को भगवान को समर्पण करना पड़ेगा। इतना समर्पण कि प्रभु जैसे चाहें, वैसे उनको कार्य में लगायें।

अगर आप कर्मातीत बनना चाहते हैं, अपने जीवन का यह लक्ष्य निर्धारित किया है तो पहले आपको योगी बनना पड़े। चलते-फिरते, उठते-बैठते आप सोचें- “मैं आत्मा हूँ, मैं आत्मा हूँ, मैं ज्योतिस्वरूप हूँ, मैं लाइट हूँ, मैं माइट हूँ, मैं परमधाम से आया हूँ, मैं अशरीरी हूँ, मैं शिव बाबा का बच्चा हूँ” – यह संकल्प आप चलाते रहें तब योग लगना सम्भव है। नहीं तो आप ट्राफिक कण्ट्रोल (Traffic control; मन का नियन्त्रण) के गीत बजाते रहिये, रेड लाइट (Red light; लाल बत्ती) करते रहिये, पालती मारके बैठे रहिये, आँख खुली रखिये, बेशक सामने भूकूटी में देखिये या नेत्रों में देखिये, लेकिन यह अनुभूति नहीं हो सकती। लेकिन आपका योग जितना भी लगे, आप लक्ष्य हमेशा ऊँचा रखिये कि मुझे कर्मातीत स्टेज को प्राप्त करना ही है।

यह जो कर्मातीत स्टेज (Stage; अवस्था) है, उसका अनुभव हमें यहाँ ही करना है क्योंकि अगर परमधाम चले जायेंगे, तो वहाँ अनुभव की बात ही नहीं

से भी अतीत।

3. तीसरा पहलू है कि जो कर्म हम करते हैं, उसमें यही भान रहे कि शिव बाबा हम से करा रहे हैं। हमने तो यह शरीर और कर्मेन्द्रियाँ उसको दे दी हैं। अब इस गाड़ी का ड्राइवर (Driver; सारथी), चलाने वाला, इसको काम में लगाने वाला वह है। हम तो इन्स्ट्रुमेन्ट (Instrument; औजार) हैं, निमित्त मात्र हैं। इससे कार्य लेने वाला वह है जिसके प्रति हमने समर्पित कर दिया है। इसमें बहुत मेहनत चाहिए। काफ़ी चिरकालीन अभ्यास चाहिए, तब जाकर यह स्टेज बनती है, ऐसे नहीं बनती है। यह तीनों अभ्यास जब इकट्ठे चलें तब वह जो निराकारी स्थिति है, बीजरूप स्थिति है, बिन्दुरूप स्थिति है अथवा कर्मातीत स्थिति है उसका अनुभव हो सकेगा।

हमको यह उम्मीद न रहे कि हमने जो अच्छा काम किया है, उस पर किसी का ध्यान ही नहीं है। बड़ों ने कुछ एक शब्द भी महिमा का कहा नहीं है। यह आशायें, तृष्णायें जो हमारे मन में लगी हुई हैं और इनसे जो हम प्रभावित होते हैं, बल्कि उत्सुक रहते हैं। उसके लिए हमें उत्कंठा बनी रहती है तो जैसे कर्मातीत स्टेज से हम बहुत दूर हैं, कोसों दूर हैं। तो हमें ऐसी स्टेज का अभ्यास करना चाहिए कि हम अपनी मस्ती में मस्त रहें, इसको ही सेल्फ रिस्पेक्ट (Self-respect; स्व-मान) कहा जाता है। हम जो हैं, जैसे हैं, हम अच्छे कर्म करते चलें। किसी पर भी डिपेण्ड (Dependent; आश्रित) न हों। बाबा ने जो हमें मर्यादायें, नियम बतायें हैं, कर्म के विधि-विधान बतायें हैं उनके अनुसार हम कर्म करते चलें।

हम शिव बाबा के लिए कहते हैं कि वह करन-करावनहार है। ऐसे हम जो कर्तव्य करते हैं उसमें ऐसा अनुभव हो कि करन-करावनहार वही है, वही करा रहा है, हम तो निमित्त हैं। ऐसे अनुभव हों कि हमें देह है ही नहीं और हमें कुछ भी नहीं चाहिए। कोई कहेंगे यह तो बहुत अच्छी सेवा करते हैं, इनकी बुद्धि बहुत

है, हम देह में होंगे ही नहीं। लेकिन इस शरीर में, इस संसार में रहते हुए हमें वहाँ का अनुभव करना है। उस जैसा कोई और अनुभव ही नहीं है, कोई प्राप्ति, कोई उपलब्धि ही नहीं है। वह अतुल है। उसकी तरफ़ अगर हमारा ध्यान नहीं है, हम बाक़ी सब कामों में पड़े हुए हैं तो समझना चाहिए कि हम बहुत गुमराह हैं। हमने अपने परम लक्ष्य को छोड़ दिया है। तो पहले हम उस स्टेज का अनुभव करने की कोशिश करें और उसका अभ्यास करें। कर्मातीत स्टेज के तीन पहलू हैं – (1) देहातीत, (2) संसारातीत और (3) इन्द्रियातीत।

1. उसके लिए हम बिल्कुल ही देहातीत स्टेज में रहें। देह का भान ज़रा भी न हो। देह की दुनिया का संकल्प ज़रा भी न हो। देह के व्यक्ति और वस्तुयें, प्रकृति के बने हुए जो भी स्थूल पदार्थ हैं या जो देहधारी हैं, देह के जो सम्बन्धी हैं उनके साथ लगन की लागत की बात तो छोड़ दीजिये, लेकिन किसी भी देहधारी की स्मृति भी न आये। जैसे परमधाम में जब आत्मा होती है तो इस प्रकृति की दुनिया से पार होती है— परात्पर, परे-से-परे जिससे परे और कुछ नहीं है। तो वह जो निराकारी दुनिया है, उस गोल्डन रेड लाइट (Golden red light; सुनहरा लाल प्रकाश) में एक मैं और एक शिव बाबा, तीसरा कोई नहीं है। देहधारी कोई नहीं, देह के प्रकृति के पदार्थ कोई नहीं हैं, वह जो मेरी स्टेज है उस स्टेज पर मैं जाऊँ और उसका अनुभव करूँ— यह है कर्मातीत स्टेज का पहला पहलू।
2. दूसरा, कर्मातीत का पहलू यह है कि संसार में जब मैं कर्म करूँ तो कर्म का जो हानि-लाभ, निन्दा-स्तुति, मान-अपमान, हर्ष-शोक होता है, कर्म के साथ कर्मफल जुटा हुआ है तो उस कर्मफल से मैं प्रभावित न हो जाऊँ। संसार में कर्म करते हुए भी कर्मयोगी रहूँ। किसी भी बात से प्रभावित न हो जाऊँ। साक्षीदृष्टा होकर, उपराम चित्त होकर इस संसार से संसारातीत होकर देखता रहूँ। उस स्थिति में मान-अपमान... आदि का कुछ भी असर न हो, जिसको हम कहेंगे कर्मातीत स्टेज यानि कर्म के फल

परिवर्तन होता है। जो हमारे संस्कार मोल्ड (Mould; सांचे में गढ़े) हों, हम सच्चा सोना बनें, वह उसी स्टेज से बन सकते हैं। तो यह शक्तिशाली अनुभव हम करें, उसके लिए कर्म करते हुए भी हम उसके प्रभाव में न आयें। निन्दा-स्तुति, मान-अपमान में न आयें और इन्द्रियों से अतीत हों।

जैसे-जैसे योग और कर्मयोग से कर्मातीत स्टेज का अनुभव करेंगे वैसे-वैसे इन्द्रियातीत और देहातीत होंगे। जैसे-जैसे आप देहातीत और इन्द्रियातीत होंगे वैसे-वैसे ही आप उसकी स्थिति में टिक सकेंगे। ये दोनों आपस में आश्रित हैं। इसलिए इसका साथ-साथ अभ्यास चलना चाहिए। तो बीच-बीच में समय निकाल करके यह अभ्यास करना चाहिए। पहले-पहले जब आप सोचें “मैं ज्योति स्वरूप आत्मा हूँ” तो आपके सामने वह ज्योतिर्बिन्दु ही आनी चाहिए। वह अपने मन से खिसकनी नहीं चाहिए। फिर सोचें कि “मेरे चारों तरफ़ लाइट है। इस शरीर के साथ लाइट का शरीर है, जो मुझे घेरे हुए है”, उस स्थिति में पहुँचते चले जायें। जैसे वर्षा ऋतु में वर्षा के बाद जब चाँद दिखायी देता है तो चाँद के आसपास एक और गोल लाइट होती है, सूर्य के भी आसपास एक और गोल लाइट होती है, जिसको प्रभामण्डल या प्रकाश का मण्डल कहते हैं। ऐसे ही हमारा भी प्रकाश का मण्डल है, प्रकाश का शरीर है। तो यह अभ्यास आप चलते-फिरते, उठते-बैठते करते रहिये और इस शरीर को भूलिये। मन को परमधाम में ले जायें, ब्रह्मलोक में पहुँच जायें जहाँ सुनहरा लाल प्रकाश ही प्रकाश है, शान्ति है, पवित्रता है, एकदम गहरी शान्ति है और ऐसा लगे कि उस प्रकाश में “मैं बिन्दु रूप प्रकाश हूँ और मेरे प्रियतम शिव बाबा, मोस्ट बिलवेड फादर (Most Beloved Father; परमप्रिय पिता) जो हैं जिनसे मेरे सर्व नाते हैं, जिनसे मेरा घनिष्ठ प्यार है, जिनके प्रति मैं समर्पित हुआ हूँ, मेरे वह परम प्रिय हैं और उनकी लाइट और माइट मुझ पर उतर रही है। मैं लाइट और माइट हूँ और शिव बाबा की लाइट और माइट मुझ पर पड़ रही है, वह मुझ से चहुँ ओर फैल रही है और रेडियेट (Radiate; विकिरण) हो रही है।” उस समय कोई और संकल्प न

अच्छी है, इनकी योग्यता बहुत अच्छी है, यह फलाने काम को जानते हैं तो हम खुश हो गये और अगर हमें दस आदमियों ने कह दिया— यह खराब हैं, तो खराब हो गये और पाँच आदमियों ने कहा अच्छे हैं, तो अच्छे हो गये। यह तो बेपेदे के लोटे हुए। इसलिए कहते हैं— “कर्मण्येवाधिकारस्ते...”, “कर्म पर तेरा अधिकार है, फल की चिन्ता तू ना कर।” तो यह भाव अगर हमारा रहेगा तो कर्मातीत अवस्था का अनुभव होगा।

कर्मातीत स्टेज वह है जिसमें हम विकर्मों से, विकारों से, निगेटिव थिंकिंग (Negative thinking; निषेधात्मक विचार) से, शरीर की याद से, देहधारियों की याद से, देह के संकल्पों से, प्रकृति के पदार्थों के संकल्पों से छूटकर “मैं आत्मा हूँ, ज्योति स्वरूप हूँ” – उस स्वरूप में टिक जाते हैं। वह सांसारिक स्टेज नहीं है। कर्मातीत स्टेज एक प्रकार से पारलौकिक स्टेज है। परमधाम में जब हम अपने को अनुभव करें, उस लाइट और माइट (Light and Might; प्रकाश और शक्ति) का गोला अनुभव करते हैं। बस, और कुछ नहीं, उसी में समाये हुए हों। उसमें हमें ऐसा अनुभव होगा कि जैसे लाइट और माइट हमारे ऊपर उतर कर और हमारे शरीर से निकल कर, उसकी पाँवरफुल करेन्ट (Powerful current) जैसे सारे संसार में फैल रही है। लाइट और माइट उसको घेरे हुए हैं और सब तरफ़ फैल रही है। तो ऐसा लगेगा जैसे शरीर छोड़ने से एक मिनट के पहले की स्टेज हो। यह देह तो है ही नहीं, वह भी बाद में आप सोचेंगे, जब उस स्टेज से नीचे उतरेंगे और कुछ समय के बाद जब आपका बोलना शुरू होगा या किसी से वर्णन करेंगे तो पहले-पहले एकदम डीप साइलेन्स (Deep silence; गहरी शान्ति) में होंगे। एकदम बोला भी नहीं जायेगा और एकदम लगेगा कि जीवन है तो यही है, अनुभव है तो यही है। इस स्थिति को हम छोड़के क्यों इस चक्कर में आते हैं— उस समय ऐसा अनुभव होगा। उसमें लाइट और माइट की, आनन्द की, शान्ति की सर्व अनुभूतियाँ समायी हुई होती हैं। वह बहुत शक्तिशाली अवस्था होती है। उसमें हमारे विकर्म दग्ध होते हैं, संस्कारों का

कर्मातीत अवस्था

अब ब्राह्मण-आत्माओं की बाल अवस्था का समय समाप्त हो चुका। युवा अवस्था में मायाजीत बनने की विधि से महावीर बने, सेवा में चक्रवर्ती बने, अनेक आत्माओं के वरदानी महादानी बने, अनेक प्रकार के अनुभव कर महारथी बने। अब कर्मातीत, वानप्रस्थ स्थिति में जाने का समय पहुँच गया है। कर्मातीत वानप्रस्थ स्थिति द्वारा ही विश्व की सर्व आत्माओं को आधा कल्प के लिए कर्मबन्धनों से मुक्त कराये, मुक्ति में भेजेंगे। मुक्त आत्मायें ही सेकण्ड में मुक्ति का वर्सा बाप से दिला सकती हैं।

मैजारिटी आत्मायें मुक्ति की भीख मांगने के लिए आप कर्मातीत, वानप्रस्थ, महादानी, वरदानी बच्चों के पास आयेंगी। जैसे अभी आपके जड़ चित्रों के आगे, कोई मन्दिरों में जाकर प्रार्थना कर सुख-शान्ति मांगते हैं, कोई तीर्थ-स्थानों पर जाकर मांगते हैं, कोई घर बैठे मांगते हैं। जिसकी जहाँ तक शक्ति होती वहाँ तक पहुँचते हैं, लेकिन यथा-शक्ति यथा-फल की प्राप्ति करते हैं। कोई दूर बैठे भी दिल से करते हैं और कोई मूर्ति के सामने तीर्थस्थान वा मन्दिरों में जाकर भी दिखावे मात्र करते हैं, स्वार्थ वश करते हैं। उन सब हिसाब अनुसार जैसा कर्म, जैसी भावना वैसे फल मिलता है। ऐसे अब समय प्रमाण आप चैतन्य महादानी, वरदानी मूर्तियों के आगे प्रार्थना करेंगे। कोई सेवा-स्थान रूपी मन्दिरों में पहुँचेंगे, कोई महान तीर्थ मधुवन तक पहुँचेंगे और कोई घर बैठे साक्षात्कार करते दिव्यबुद्धि द्वारा प्रत्यक्षता का अनुभव करेंगे। सम्मुख न आते भी स्नेह और दृढ़ संकल्प से प्रार्थना करेंगे। मनसा में आप चैतन्य फ़रिश्तों का आह्वान कर मुक्ति से वर्से की अंचली मांगेंगे।

थोड़े समय में सर्व आत्माओं को वर्सा दिलाने का कार्य तीव्र गति से करना होगा। जैसे विनाश के साधन रिफाइन होने के कारण तीव्र गति से समाप्ति के निमित्त बनेंगे, ऐसे आप वरदानी-महादानी आत्मायें अपने कर्मातीत, फ़रिश्ते स्वरूप के सम्पूर्ण शक्तिशाली स्वरूप द्वारा सर्व की प्रार्थना का सपाण्ड मुक्ति का वर्सा दिलायेंगी। तीव्र गति के इस कार्य के लिए मास्टर

करके इसी भाव में, इसी संकल्प में अपने को एकाग्र करें। फिर उसके बाद यह संकल्प भी नहीं रहेगा बल्कि अनुभव ही रह जायेगा। आप उस अनुभव में लवलीन हो जायेंगे। इसका अभ्यास आप बार-बार करते रहिये।

जब आपने कर्मातीत स्टेज का एक बार भी चस्का चख लिया, फिर वह आपको बार-बार खींचेगा। आप उससे हटना चाहेंगे तो मुश्किल हो जायेगा। उसमें ज़्यादा कोई मेहनत करने की ज़रूरत नहीं होगी। इसके लिए अभ्यास की ज़रूरत है और वैराग वृत्ति की ज़रूरत है।*

— ब्रह्माकुमार जगदीश चन्द्र ।

* यह प्रस्तावना, भ्राता जगदीश चन्द्र जी के ध्वनि-मुद्रित "कर्मातीत कैसे बने?" प्रवचन से संकलित किया गया है।

में फ़रक है। मेहमान उसको कहा जाता है जो आता है और जाता है। अभी आते हैं फिर जाने के लिए। दूसरे शरीर में प्रवेश हो कैसे कर्तव्य करना होता, यह अनुभव बाप के समान करना है। दिन प्रतिदिन तुम बच्चों की बहुत कुछ समान स्थिति होती जायेगी। आप लोग भी ऐसे अनुभव करेंगे। सचमुच जैसे लोन लिया हुआ है, कर्तव्य के लिए मेहमान हैं। जब तक अपने को मेहमान नहीं समझते हो तब तक न्यारी अवस्था नहीं हो सकती है। जो ज़्यादा न्यारी अवस्था में रहते हैं, उनकी स्थिति में विशेषता क्या होती है? उनकी बोली से, उनके चलन से उपराम स्थिति का औरों को अनुभव होगा। जितना ऊपर स्थिति जायेगी, उतना उपराम होते जायेंगे। शरीर में होते हुए भी इस उपराम अवस्था तक पहुँचना है। बिल्कुल देह और देही अलग महसूस हो। उसको कहा जाता है याद के सम्पूर्ण स्टेज वा योग की प्रैक्टिकल सिद्धि। बात करते-करते जैसे न्यारापन खींचे। बात सुनते भी जैसे कि सुनते नहीं। ऐसी भासना औरों को भी आये। ऐसी स्थिति की स्टेज को कर्मातीत अवस्था कहा जाता है।

(ई) स्व-पुरुषार्थ का बैलेन्स या गति कभी कभी कम होती है, उसका कारण क्या? 'करनहार' के बजाय मैं ही करने वाली या वाला हूँ, 'करनहार' के बजाय अपने को 'करावनहार' समझ लेते हो— मैं कर रहा हूँ। जो भी जिस प्रकार की भी माया आती है, उसका गेट कौन-सा है? माया का सब से अच्छा सहज गेट जानते तो हो ही— 'मैं'। तो यह गेट अभी पूरा बन्द नहीं किया है। ऐसा बन्द करते हो जो माया सहज ही खोल लेती है और आ जाती है। अगर 'करनहार' हूँ तो कराने वाला अवश्य याद आयेगा। कर रही हूँ, कर रहा हूँ, लेकिन कराने वाला बाप है। बिना 'करावनहार' के 'करनहार' बन नहीं सकते हैं। डबल रूप से 'करावनहार' की स्मृति चाहिए। एक तो बाप 'करावनहार' है और दूसरा मैं आत्मा भी इन कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म कराने वाली हूँ। इससे क्या होगा कि कर्म करते भी कर्म के अच्छे या बुरे प्रभाव में नहीं आयेंगे। इसको कहते हैं— कर्मातीत अवस्था।

सर्वशक्तिवान, शक्तियों के भण्डार, ज्ञान के भण्डार, याद स्वरूप तैयार हो? विनाश की मशीनरी और वरदान की मशीनरी— दोनों तीव्र गति के साथ-साथ चलेंगी।

आप सबका लक्ष्य क्या है? कर्मातीत बनना है ना! या थोड़ा-थोड़ा कर्मबन्धन रहा तो कोई हर्जा नहीं? रहना चाहिए या नहीं रहना चाहिए? कर्मातीत बनना है? बाप से प्यार की निशानी है— कर्मातीत बनना।

1. कर्मातीत अवस्था का अर्थ और परिभाषा

कर्मातीत की परिभाषा बहुत है। जैसे कर्मों की गति गहन है, कर्मातीत स्थिति की परिभाषा भी बड़ी महान है और कर्मातीत बनना जरूरी है। बिना कर्मातीत बनने के, साथ नहीं चलेंगे। साथ कौन जायेंगे? जो समान होंगे। ब्रह्मा बाप को देखा— कर्मातीत स्थिति को कैसे प्राप्त किया? कर्मातीत बनने का फ़ालो करना अर्थात् साथ चलने योग्य बनना।

1.1. अतीत अथवा न्यारापन का अनुभव ही कर्मातीत अवस्था है।

(अ) बच्चों की विशाल दिल देख, बच्चों को सदा विशाल दिल, विशाल बुद्धि, विशाल सेवा और विशाल संस्कार— ऐसे 'सदा विशाल भव' का वरदान भी वरदाता बाप दे रहे हैं। विशाल दिल अर्थात् बेहद के स्मृति-स्वरूप। हर बात में बेहद अर्थात् विशाल। जहाँ बेहद है तो कोई भी प्रकार की हद अपने तरफ़ आकर्षित नहीं करती है। इसको ही बाप समान कर्मातीत फ़रिश्ता जीवन कहा जाता है। कर्मातीत का अर्थ ही है— सर्व प्रकार के हद के स्वभाव संस्कार से अतीत अर्थात् न्यारा। हद है बन्धन, बेहद है निर्बन्धन। तो सदा इसी विधि से सिद्धि को प्राप्त करते रहेंगे। सभी ने स्वयं से जो संकल्प किया वह सदा अमर है, अटल है, अखण्ड है अर्थात् खण्डित होने वाला नहीं है।

(आ) जैसे साकार रूप में बाप के लिए समझते थे कि लोन (Loan) ले आये हैं। उसी समान अनुभव अभी होता है। अभी आते हैं मेहमान बनकर। यूँ तो आप सभी भी अपने को मेहमान समझते हो। लेकिन आपके और बाप के समझने

1.3 इच्छा मात्रम् अविद्या की स्थिति ही कर्मातीत अवस्था है।

(अ) जो 'इच्छा मात्रम् अविद्या' की स्थिति में स्थित होगा, वही किसी की भी इच्छाओं की पूर्ति कर सकता है। अगर स्वयं में ही कोई इच्छा रही होगी तो वह दूसरे की इच्छाओं को पूर्ण नहीं कर सकता। 'इच्छा मात्रम् अविद्या' की स्टेज तब रह सकती है जब स्वयं युक्तियुक्त सम्पन्न, नॉलेजफुल और सदा सक्सेसफुल अर्थात् सफलता-मूर्त होंगे। जो स्वयं सफलता मूर्त नहीं होगा तो वह अनेक आत्माओं के संकल्प को भी सफल नहीं कर सकता। इसलिए जो सम्पन्न नहीं तो उसकी इच्छायें ज़रूर होंगी क्योंकि सम्पन्न होने के बाद ही 'इच्छा मात्रम् अविद्या' की स्टेज आती है; तब कोई अप्राप्त वस्तु नहीं रह जाती, तो ऐसी स्टेज को ही कर्मातीत की स्टेज कहा जाता है।

(आ) जैसे देवताओं के लिए गायन है - इच्छा मात्रम् अविद्या। यह है फ़रिश्ता जीवन की विशेषता। देवताई जीवन में तो इच्छा की बात ही नहीं। ब्राह्मण जीवन से फ़रिश्ता जीवन बन जाती अर्थात् कर्मातीत स्थिति को प्राप्त हो जाते। किसी भी शुद्ध कर्म वा व्यर्थ कर्म वा विकर्म वा पिछला कर्म, किसी भी कर्म के बन्धन में बँध कर करना - इसको कर्मातीत अवस्था नहीं कहेंगे। एक है कर्म का सम्बन्ध, एक है कर्म का बन्धन। तो जैसे यह गायन है - हृद की इच्छा से अविद्या, ऐसे फ़रिश्ता जीवन वा ब्राह्मण जीवन अर्थात् 'मुश्किल' शब्द की अविद्या, बोझ से अविद्या, मालूम ही नहीं कि वह क्या होता है! तो वरदानी आत्मा अर्थात् मुश्किल जीवन से अविद्या का अनुभव करने वाली। इसको कहा जाता है - वरदानी आत्मा अर्थात् कर्मातीत आत्मा। तो बाप समान बनना अर्थात् सदा वरदाता से प्राप्त हुए वरदानों से पलना, सदा निश्चिन्त, निश्चित विजय अनुभव करना।

1.4. कोई कर्मभोग व कर्म अपनी तरफ आकर्षित नहीं करेगा, इसी को कर्मातीत स्टेज कहा जाता है।

(अ) जो कहावत है ना- पहाड़ भी राई बन जाती है। ऐसे कोई भी कार्य लाइट रूप बनने से हल्का हो जायेगा, बुद्धि लगाने की भी आवश्यकता नहीं

1.2. कर्मातीत अर्थात् अभी-अभी शरीरधारी और अभी-अभी शरीर से परे।

(अ) जैसे एक सेकण्ड में स्विच ऑन और ऑफ किया जाता है, ऐसे ही एक सेकण्ड में शरीर का आधार लिया और फिर एक सेकण्ड में शरीर से परे अशरीरी स्थिति में स्थित हो सकते हो? अभी-अभी शरीर में आये, फिर अभी-अभी अशरीरी बन गये— यह प्रैक्टिस करनी है। इसी को ही कर्मातीत अवस्था कहा जाता है। ऐसा अनुभव होगा जब चाहे कोई कैसा भी वस्त्र धारण करना वा न करना— यह अपने हाथ में रहेगा। आवश्यकता हुई धारण किया, आवश्यकता न हुई तो शरीर से अलग हो गये। ऐसे अनुभव इस शरीर रूपी वस्त्र धारण कर और कार्य कर रहे हैं। कार्य पूरा हुआ और वस्त्र से न्यारे हुए। शरीर और आत्मा— दोनों का न्यारापन चलते-फिरते भी अनुभव होना है। जैसे कोई प्रैक्टिस हो जाती है ना? लेकिन यह प्रैक्टिस किनको हो सकती है? जो शरीर के साथ वा शरीर के सम्बन्ध में जो भी बातें हैं, शरीर की दुनिया, सम्बन्ध वा अनेक जो भी वस्तुयें हैं उनसे बिल्कुल डिटैच होंगे, ज़रा भी लगाव नहीं होगा, तब न्यारा हो सकेंगे। अगर सूक्ष्म संकल्प में भी हल्कापन नहीं है, डिटैच नहीं हो सकते तो न्यारेपन का अनुभव नहीं कर सकेंगे।

(आ) जैसे बाप के लिए कहा हुआ है कि वह जो है, जैसा है, वैसा ही उनको जानने वाला सर्व प्राप्तियाँ कर सकता है। वैसे ही स्वयं को जानने के लिए भी जो हूँ, जैसा हूँ, ऐसा ही जान कर और मान कर सारा दिन चलते-फिरते हो? क्योंकि जैसे बाप को सर्व स्वरूपों से वा सर्व सम्बन्धों से जानना आवश्यक है, ऐसे ही बाप द्वारा स्वयं को भी ऐसा जानना आवश्यक है। जानना अर्थात् मानना। मैं जो हूँ, जैसा हूँ — ऐसे मानकर चलेंगे तो क्या स्थिति होगी? देह में विदेही, व्यक्त में होते अव्यक्त, चलते-फिरते फ़रिश्ता वा कर्म करते हुए कर्मातीत। क्योंकि जब स्वयं को अच्छी तरह से जान और मान लेते हैं; तो जो स्वयं को जानता है उस द्वारा कोई भी संयम अर्थात् नियम नीचे-ऊपर नहीं हो सकता। संयम को जानना अर्थात् संयम में चलना।

1.6. सर्व व्यक्त आकर्षणों से परे इसी स्थिति को कर्मातीत स्थिति कहा जाता है।

(अ) आवाज़ से परे अपनी श्रेष्ठ स्थिति को अनुभव करते हो? वह श्रेष्ठ स्थिति सर्व व्यक्त आकर्षण से परे शक्तिशाली न्यारी और प्यारी स्थिति है। एक सेकण्ड भी इस श्रेष्ठ स्थिति में स्थित हो जाओ तो उसका प्रभाव सारा दिन कर्म करते हुए भी स्वयं में विशेष शान्ति की शक्ति अनुभव करेंगे। इसी स्थिति को— कर्मातीत स्थिति, बाप समान सम्पूर्ण स्थिति कहा जाता है। इसी स्थिति द्वारा हर कार्य में सफलता का अनुभव कर सकते हो। ऐसी शक्तिशाली स्थिति का अनुभव किया है?

(आ) कर्मातीत अर्थात् कर्म के वश होने वाला नहीं लेकिन मालिक बन, अर्थात् बन कर्मेन्द्रियों के सम्बन्ध में आये, विनाशी कामना से न्यारा हो कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म कराये। आत्मा मालिक को कर्म अपने अधीन न करे, लेकिन अधिकारी बन कर्म कराता रहे। कर्मेन्द्रियाँ अपने आकर्षण में आकर्षित करती हैं अर्थात् कर्म के वशीभूत बनते हैं, अधीन होते हैं, बन्धन में बँधते हैं; कर्मातीत अर्थात् इससे अतीत अर्थात् न्यारा। आँख का काम है देखना लेकिन देखने का कर्म कराने वाला कौन है? आँख कर्म करने वाली है और आत्मा कर्म कराने वाली है। तो कराने वाली आत्मा, करने वाली कर्मेन्द्रिय के वश हो जाये— इसको कहते हैं कर्मबन्धन। कराने वाले बन, कर्म कराओ— इसको कहेंगे कर्म के सम्बन्ध में आना। कर्मातीत आत्मा सम्बन्ध में आती है, लेकिन बन्धन में नहीं रहती। कभी-कभी कहते हो ना कि बोलने नहीं चाहते थे लेकिन बोल लिया, करने नहीं चाहते थे, लेकिन कर लिया— इसको कहा जाता है कर्म के बन्धन में वशीभूत आत्मा। ऐसी आत्मा कर्मातीत स्थिति के नज़दीक कहेंगे या दूर कहेंगे?

1.7. सर्व बन्धनों से मुक्त रहना ही कर्मातीत अवस्था है।

(अ) कर्मातीत अर्थात् ^{दि}ह के बन्धन से भी मुक्त। कर्म कर रहे हैं लेकिन उनके कर्मों का खाता नहीं बनेगा जैसे कि न्यारे रहेंगे, कोई अटैचमेन्ट नहीं होगी। कर्म करने वाला अलग और कर्म अलग हैं— ऐसे अनुभव दिन प्रतिदिन होता

रहेगी। हल्के काम में बुद्धि नहीं लगानी पड़ती है। तो इसी लाइट-स्वरूप की स्थिति में, जो मास्टर जानी-जाननहार वा मास्टर त्रिकालदर्शी के लक्षण हैं, वह आ जाते हैं। करें या न करें— यह भी सोचना नहीं पड़ेगा। बुद्धि में वही संकल्प होगा जो यथार्थ करना है। उसी अवस्था के बीच कोई भी कर्मभोग की भासना नहीं रहेगी। जैसे इंजेक्शन के नशे में बोलते हैं, हिलते हैं, सभी कुछ करते भी स्मृति नहीं रहती है। कर रहे हैं — यह स्मृति नहीं रहती है, स्वतः ही होता रहता है। वैसे कर्मभोग व कर्म किसी भी प्रकार का चलता रहेगा लेकिन स्मृति नहीं रहेगी। वह अपनी तरफ आकर्षित नहीं करेगा। ऐसी स्टेज को ही अन्तिम (कर्मातीत) स्टेज कहा जाता है।

(आ) चाहे पिछले कर्मों के हिसाब-किताब के फलस्वरूप तन का रोग हो, मन के संस्कार अन्य आत्माओं के संस्कारों से टक्कर भी खाते हों लेकिन कर्मातीत, कर्मभोग के वश न होकर मालिक बन चुक्तु करायेंगे।

1.5. कर्मातीत अवस्था अर्थात् कर्मों के अधीन नहीं, कर्मों के परतन्त्र नहीं।

(अ) आज बापदादा 'राज्यसभा' को देख रहे हैं। हरेक बच्चा स्वराज्य अधिकारी, अपने नम्बरवार 'कर्मातीत स्टेज' के तख्त अधिकारी हैं। वर्तमान संगमयुगी स्वराज्य अधिकारी आत्माओं का आसन कहो वा सिंहासन कहो, वह है — 'कर्मातीत स्टेज'। कर्मातीत अर्थात् कर्म करते भी कर्म के बन्धनों से अतीत। कर्मों के वशीभूत नहीं, लेकिन कर्मेन्द्रियों द्वारा हर कर्म करते हुए अधिकारीपन के नशे में रहने वाले।

(आ) आप श्रेष्ठ आत्मायें कर्मातीत अर्थात् कर्म के आकर्षण से अतीत स्टेज पर स्थित होने वाले, लास्ट स्टेज का वर्णन ही करते हो— कर्मातीत अवस्था अर्थात् कर्म के अधीन नहीं, कर्मों के परतन्त्र नहीं। स्वतन्त्र हो कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म कराते हो ?

कर्मातीत स्थिति का अनुभव कराती है। तो किसी बन्धन में बन्धने वाले तो नहीं हो ना? औरों को भी बन्धन से छुड़ाने वाले। जैसे बाप ने छुड़ाया, ऐसे बच्चों का भी काम है छुड़ाना।

1.9. सहारा एक ही अविनाशी सहारा हो; न व्यक्ति का, न वैभव वा वस्तु का सहारा हो, इसको ही कर्मातीत कहते हैं।

ब्रह्मा बाप का बच्चों से विशेष प्यार है इसलिए ब्रह्मा बाप सदा बच्चों को अपने समान एवररेडी बन्धनमुक्त देखने चाहते हैं। बन्धनमुक्त का ही नज़ारा देखा ना! कितने में एवररेडी हुआ! किसी के बन्धन में बँधा? कोई याद आया कि फलानी कहाँ है? फलानी सेवा की साथी है। याद आया? तो एवररेडी का पार्ट, कर्मातीत स्टेज का पार्ट देखा ना! जितना ही बच्चों से अति प्यार रहा, उतना ही प्यारा और न्यारा देखा ना! बुलावा आया और गया। नहीं तो सबसे ज़्यादा बच्चों से प्यार ब्रह्मा का रहा ना! जितना प्यारा, उतना न्यारा। किनारा करना देख लिया ना! कोई भी चीज़ अथवा भोजन जब तैयार हो जाता है तो किनारा छोड़ देता है ना! तो सम्पूर्ण होना अर्थात् किनारा छोड़ना। किनारा छोड़ना माना किनारे हो गये। सहारा एक ही अविनाशी सहारा है। न व्यक्ति को, न वैभव वा वस्तु को सहारा बनाओ। इसको ही कहते हैं— “कर्मातीत”।

1.10. सर्व हिसाब-किताब से भी मुक्त अवस्था है —
कर्मातीत अवस्था।

(अ) आज के दिन को बाप समान बनने का स्मृति अर्थात् समर्थी-दिवस कहते हैं। क्यों? आज का दिन ब्रह्मा बाप के सम्पन्न और सम्पूर्ण बाप समान बनने का यादगार दिवस है। ब्रह्मा बच्चा सो बाप, क्योंकि ब्रह्मा बच्चा भी है, बाप भी है। आज के दिन ब्रह्मा ने बच्चे के रूप में सपूत बच्चा बनने का सबूत दिया; स्नेह के स्वरूप का, समान बनने का सबूत दिया; अति प्यारे और अति न्यारेपन का सबूत दिया; बाप समान कर्मातीत अर्थात् कर्म के बन्धन से मुक्त, न्यारा बनने का सबूत दिया; सारे कल्प के कर्मों के हिसाब-किताब से मुक्त होने

जायेगा। इस अवस्था में जास्ती बुद्धि चलाने की भी आवश्यकता नहीं है। संकल्प उठा और जो होना है वही होगा। ऐसी स्थिति में सभी को आना होगा।

(आ) सदा अपने को बेहद के विश्व-सेवाधारी समझते हो? हृद के सेवाधारी तो नहीं हो ना! सब बेहद के हो? किसी को भी किसी स्थान से, किसी भी स्थान पर भेज दें तो तैयार हो? सभी उड़ते पंछी हो? अपने देह के भान की डाली से भी उड़ते पंछी हो या देह के भान की डाली कभी-कभी अपने तरफ खींचती है? सबसे ज़्यादा अपने तरफ आकर्षित करने वाले डाली यह देह का भान है। ज़रा भी पुराने संस्कार, स्वभाव अपने तरफ आकर्षित करते माना देह का भान है। मेरा स्वभाव ऐसा है, मेरा संस्कार ऐसा है, मेरी रहन-सहन ऐसी है, मेरी आदत ऐसी है— यह सब देह भान की निशानी हैं। तो इस डाली से उड़ते पंछी हो? इसको ही कहा जाता है— कर्मातीत स्थिति। कोई भी बन्धन नहीं।

1.8. कर्म के बन्धनों और आदतों से मुक्त अवस्था ही कर्मातीत अवस्था है।

(अ) कर्मातीत का अर्थ यह नहीं है कि कर्म से अतीत हो, लेकिन कर्म के बन्धन से न्यारे। तो देह के कर्म, जैसे, किसका नेचर होता है – आराम से रहना, आराम से समय पर खाना, चलना यह भी कर्म का बन्धन अपने तरफ खींचता है। इस कर्म के बन्धन अर्थात् आदत से भी परे। इसको कहा जाता है कर्मातीत।

(आ) कर्मातीत अवस्था होनी ही है। हर व्यक्ति, वस्तु, कर्म के बन्धन से अतीत होना, न्यारा होना— इसको ही कर्मातीत अवस्था कहते हैं। कर्मातीत माना कर्म से न्यारा हो जाना नहीं। कर्म के बन्धनों से न्यारा। न्यारा बनकर कर्म करना अर्थात् कर्म से न्यारे। कर्मातीत अवस्था अर्थात् बन्धनमुक्त, योगयुक्त, जीवनमुक्त अवस्था!

(इ) कर्म के बन्धन से मुक्त – इसको ही 'कर्मातीत' कहते हैं। कर्मातीत का अर्थ यह नहीं है कि कर्म से अतीत हो जाओ। कर्म से न्यारे नहीं, कर्म के बन्धन में फँसने से न्यारे, इसको कहते हैं— कर्मातीत। कर्मयोगी स्थिति

कहा जाता है कर्मबन्धन, जो स्वयं को भी परेशान करता है और दूसरों को भी परेशान करता है।

(आ) कर्मातीत स्थिति के समीप आ रहे हैं? कर्म भी वृद्धि को प्राप्त होता रहता है, लेकिन कर्मातीत अर्थात् कर्म के किसी भी बन्धन के स्पर्श से न्यारे। ऐसा ही अनुभव बढ़ता रहे। जैसे मुझ आत्मा ने इस शरीर द्वारा कर्म किया ना, ऐसे न्यारापन रहे। न कार्य के स्पर्श करने का और करने के बाद जो रिजल्ट हुई— उस फल को प्राप्त करने में भी न्यारापन। कर्म का फल अर्थात् जो रिजल्ट निकलती है उसका भी स्पर्श न हो, बिल्कुल ही न्यारापन अनुभव होता रहे। जैसे कि दूसरे कोई ने कराया और मैंने किया। किसी ने कराया और मैं निमित्त बनी। लेकिन निमित्त बनने में भी न्यारापन। ऐसी कर्मातीत स्थिति बढ़ती जाती है— ऐसा फील होता है?

(इ) महारथियों की स्थिति औरों से न्यारी और प्यारी स्पष्ट हो रही है ना! जैसे ब्रह्मा बाप स्पष्ट थे, ऐसे नम्बरवार आप निमित्त आत्मायें भी साकार स्वरूप से स्पष्ट होती जातीं। कर्मातीत अर्थात् न्यारा और प्यारा। कर्म दूसरे भी करते हैं और आप भी करते हो लेकिन आपके कर्म करने में अन्तर है। स्थिति में अन्तर है। जो कुछ बीता और न्यारा बन गया। कर्म किया और वह करने के बाद ऐसा अनुभव होगा जैसे कि कुछ किया नहीं। कराने वाले ने करा लिया। ऐसी स्थिति का अनुभव करते रहेंगे। हल्कापन रहेगा। कर्म करते भी तन का भी हल्कापन, मन की स्थिति में भी हल्कापन। कर्म की रिजल्ट मन को खँच लेती है। ऐसी स्थिति है? जितना ही कार्य बढ़ता जायेगा उतना ही हल्कापन भी बढ़ता जायेगा। कर्म अपनी तरफ आकर्षित नहीं करेगा लेकिन मालिक होकर कर्म कराने वाला करा रहा है और निमित्त करने वाले निमित्त बनकर कर रहे हैं।

का सबूत दिया। सिवाय सेवा के, स्नेह के, और कोई बन्धन नहीं। सेवा में भी सेवा के बन्धन में बँधने वाले सेवाधारी नहीं। क्योंकि सेवा में कोई बन्धनयुक्त बन सेवा करते और कोई बन्धनमुक्त बन सेवा करते। सेवाधारी ब्रह्मा बाप भी है। लेकिन सेवा द्वारा हृद की रॉयल इच्छायें सेवा में भी हिसाब-किताब के बन्धन में बाँधती हैं। लेकिन सच्चे सेवाधारी इस हिसाब-किताब से भी मुक्त हैं। इसी को ही कर्मातीत स्थिति कहा जाता है। जैसे देह का बन्धन, देह के सम्बन्ध का बन्धन, ऐसे सेवा में स्वार्थ – यह भी बन्धन कर्मातीत बनने में विघ्न डालता है। कर्मातीत बनना अर्थात् इस रॉयल हिसाब-किताब से भी मुक्त।

2. कर्मातीत अवस्था का विषय-विस्तार

(अ) हर एक ब्राह्मण-आत्मा विदेही बनने के वा कर्मातीत बनने के श्रेष्ठ लक्ष्य को ले सम्पूर्ण स्टेज के समीप आ रही है। तो आज बापदादा बच्चों की कर्मातीत, विदेही स्थिति की समीपता को देख रहे थे कि कौन-कौन कितने समीप पहुँचे हैं, 'फालो ब्रह्मा बाप' कहाँ तक किया है वा कर रहे हैं! लक्ष्य सभी का बाप के समीप और समान बनने का ही है। लेकिन प्रैक्टिकल में नम्बरवार बन जाते हैं। इस देह में रहते विदेही अर्थात् कर्मातीत बनने का एग्जाम्पल (Example; मिसाल) साकार में ब्रह्मा बाप को देखा। तो कर्मातीत बनने की विशेषता क्या है? जब तक यह देह है, कर्मेन्द्रियों के साथ इस कर्मक्षेत्र पर पार्ट बजा रहे हो, तब तक कर्म के बिना सेकण्ड भी रह नहीं सकते हो। कर्मातीत अर्थात् कर्म करते हुए कर्म के बन्धन से परे। एक है बन्धन और दूसरा है सम्बन्ध। कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म के सम्बन्ध में आना अलग चीज़ है, कर्म के बन्धन में बँधना वह अलग चीज़ है। कर्मबन्धन, कर्म के हृद के फल के वशीभूत बना देता है। वशीभूत शब्द ही सिद्ध करता है जो किसी के भी वश में आ जाता। वश में आने वाले भूत के समान भटकने वाले बन जाते हैं। जैसे अशुद्ध आत्मा भूत बन जब प्रवेश होती है, तो मनुष्य-आत्मा की क्या हालत होती है? परवश हो भटकते रहते हैं। ऐसे कर्म के वशीभूत अर्थात् कर्म के विनाशी फल की इच्छा के वशीभूत हैं तो कर्म भी बन्धन में बाँध बुद्धि द्वारा भटकाता रहता है। इसको

3.3. आवाज़ से परे शान्त स्वरूप की स्थिति अधिक प्रिय लगेगी

सभी आवाज़ से परे अपने शान्ति स्वरूप स्थिति में स्थित रहने का अनुभव बहुत समय कर सकते हो? आवाज़ में आने का अनुभव ज़्यादा कर सकते हो वा आवाज़ से परे रहने का अनुभव ज़्यादा समय कर सकते हो? जितना लास्ट स्टेज (Last stage; अन्तिम अवस्था) अथवा कर्मातीत स्टेज समीप आती जायेगी उतना आवाज़ से परे शान्त स्वरूप की स्थिति अधिक प्रिय लगेगी। इस स्थिति में सदा अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति होगी। इसी अतीन्द्रिय सुखमय स्थिति द्वारा अनेक आत्माओं का सहज ही आह्वान कर सकेंगे। यह पावरफुल (Powerful; शक्तिशाली) स्थिति 'विश्व-कल्याणकारी स्थिति' कही जाती है। जैसे आजकल साइंस के साधन द्वारा समीप सुनने में आती है, टी.वी. (T.V.; दूरदर्शन) द्वारा दूर का दृश्य समीप दिखायी देता है, ऐसे ही साइलेन्स की स्टेज द्वारा कितने भी दूर रहती हुई आत्मा को सन्देश पहुँचा सकते हो। वो ऐसे अनुभव करेंगे जैसे साकार में सम्मुख किसी ने सन्देश दिया है। दूर बैठे हुए भी आप श्रेष्ठ आत्माओं के दर्शन और प्रभु के चरित्रों के दृश्य ऐसे अनुभव करेंगे जैसे कि सम्मुख देख रहे हैं। संकल्प के द्वारा दिखायी देगा अर्थात् आवाज़ से परे संकल्प की सिद्धि का पार्ट बजायेंगे। लेकिन इस सिद्धि की विधि ज़्यादा-से-ज़्यादा अपने शान्त स्वरूप में स्थित होना है। इसलिए कहा जाता है— साइलेन्स इज़ गोल्ड (Silence is gold), यही गोल्डन ऐज्ड स्टेज (Golden aged stage) कही जाती है।

3.4. इष्ट देवात्मा के संस्कार इमर्ज रहेंगे

बापदादा हर बच्चे के नम्बरवार राज्य-अधिकार के हिसाब से नम्बरवार सभा देख रहे हैं। तख्त भी नम्बरवार हैं और अधिकार भी नम्बरवार हैं। कोई सर्व-अधिकारी हैं और कोई अधिकारी हैं। जैसे भविष्य में विश्व-महाराजा और महाराजा— अन्तर है। ऐसे यहाँ भी सर्व कर्मेन्द्रियों के अधिकारी अर्थात् सर्व कर्मों के बन्धन से मुक्त— इसको कहा जाता है 'सर्व अधिकारी' और दूसरे 'सर्व' नहीं, लेकिन अधिकारी हैं। तो दोनों ही नम्बर की तख्तनशीन दरबार देख

3. कर्मातीत अवस्था के लक्षण

3.1. देखने वालों को डबल साक्षात्कार होते रहेंगे

अब महारथियों को यह प्रैक्टिस करनी है— बिल्कुल ही न्यारेपन अर्थात् कर्मातीत अवस्था का अनुभव हो। इसी स्टेज पर रहने से अन्य आत्माओं को भी आप लोगों से न्यारेपन का अनुभव होगा, वह भी महसूस करेंगे। जैसे योग में बैठने के समय कई आत्माओं को अनुभव होता है ना— यह ड्रिल कराने वाले न्यारी स्टेज पर हैं। ऐसे चलते-फिरते फ़रिश्ते-पन के साक्षात्कार होंगे। यहाँ बैठे हुए भी अनेक आत्माओं को, जो भी आपके सतयुगी फैमली में समीप आने वाले होंगे उन्हीं को, आप लोगों के फ़रिश्ते रूप और भविष्य राज्यपद के दोनों साथ-साथ साक्षात्कार होंगे। जैसे शुरू में ब्रह्मा में सम्पूर्ण स्वरूप और श्रीकृष्ण का दोनों साथ-साथ साक्षात्कार करते थे, ऐसे अब उन्हीं को तुम्हारे डबल रूप का साक्षात्कार होगा। जैसे-जैसे नम्बरवार इस न्यारी वा कर्मातीत स्टेज पर आते जायेंगे तो आप लोगों के भी यह डबल साक्षात्कार होंगे।

3.2. सर्व बातों में समानता आती रहेगी

सभी स्वयं को कर्मातीत अवस्था के नज़दीक अनुभव करते जा रहे हो? कर्मातीत अवस्था के समीप पहुँचने की निशानी जानते हो? समीपता की निशानी समानता है। किस बात में? आवाज़ में आना वा आवाज़ से परे हो जाना, साकार स्वरूप में कर्मयोगी बनना और साकार स्मृति से परे न्यारे निराकारी स्थिति में स्थित होना, सुनना और स्वरूप होना, मनन करना और मगन रहना, रूह-रिहान में आना और रूहानियत में स्थित हो जाना, सोचना और करना। कर्मेन्द्रियों में आना अर्थात् कर्मेन्द्रियों का आधार लेना और कर्मेन्द्रियों से परे होना, प्रकृति द्वारा प्राप्त हुए साधनों को स्वयं प्रति कार्य में लगाना और प्रकृति के साधनों से समय प्रमाण निराधार होना, देखना, सम्पर्क में आना और देखते हुए न देखना, सम्पर्क में आते कमल पुष्प के समान रहना, इन सभी बातों में समानता। उसको कहा जाता है कर्मातीत अवस्था की समीपता।

करेगा तो मुख से भी वर्णन करेगा।

दूसरी बात - व्याधि का रूप होने के कारण स्वयं भी परेशान होगा और दूसरों को भी परेशान करेगा। वह चिल्लायेगा और कर्मातीत चला लेगा। कोई को थोड़ा-सा दर्द होता है तो भी चिल्लाते बहुत हैं और कोई को ज़्यादा दर्द होते भी चलाते हैं।

(आ) कर्मातीत स्थिति वाला देह का मालिक होने के कारण कर्मभोग होते हुए भी न्यारा बनने का अभ्यासी है। बीच-बीच में अशरीरी-स्थिति का अनुभव बीमारी से परे कर देता है। जैसे साइन्स के साधन द्वारा बेहोश कर देते हैं तो दर्द होते भी भूल जाते हैं, दर्द फील (Feel; महसूस) नहीं करते हैं क्योंकि दवाई का नशा होता है। तो कर्मातीत अवस्था वाले अशरीरी बनने के अभ्यासी होने कारण बीच-बीच में यह रूहानी इंजेक्शन (Injection) लग जाता है। इस कारण सूली से काँटा अनुभव होता है।

(इ) और बात - फ़ालो फ़ादर होने के कारण विशेष आज्ञाकारी बनने का प्रत्यक्ष-फल बाप से विशेष दिल की दुआयें प्राप्त होती हैं। एक अपना अशरीरी बनने का अभ्यास, दूसरा आज्ञाकारी बनने का प्रत्यक्ष-फल बाप की दुआयें, वह बीमारी अर्थात् कर्मभोग को सूली से कांटा बना देती हैं।

(ई) कर्मातीत श्रेष्ठ आत्मा कर्मभोग को, कर्मयोग की स्थिति में परिवर्तन कर देगी। छोटी को बड़ी बात बनाना या बड़ी को छोटी बात बनाना- यह अपनी स्थिति के ऊपर है। परेशान होना वा अपने अधिकारी-पन की शान में रहना- अपने ऊपर है। क्या हो गया वा जो हुआ वह अच्छा हुआ- यह अपने ऊपर है। यह निश्चय बुरे को भी अच्छे में बदल सकता है। कर्म को देख कर्म के बन्धन में नहीं फँसो। क्या हो गया, कैसे हो गया, ऐसा तो होना नहीं चाहिए, मेरे से ही क्यों होता, मेरा ही भाग्य शायद ऐसा है- यह रस्सियाँ बाँधते जाते हो। यह संकल्प ही रस्सियाँ हैं। इसलिए कर्म के बन्धन में आ जाते हो। व्यर्थ संकल्प ही कर्मबन्धन की सूक्ष्म रस्सियाँ हैं।

(उ) कर्मातीत आत्मा कहेगी- जो होता है वह अच्छा है, मैं भी अच्छा, बाप

रहे हैं। हरेक राज्य-अधिकारी के मस्तक पर बहुत सुन्दर रंग-बिरंगी मणियाँ चमक रही हैं। यह मणियाँ हैं – ‘दिव्य गुणों’ की। जितना-जितना दिव्य गुणधारी बने हो उतनी ही मणियाँ मस्तक पर चमक रही हैं। किसकी ज़्यादा हैं, किसकी कम हैं। चमक भी हरेक की अपनी-अपनी है। ऐसा अपना राज्यसभा का राज्य-अधिकारी चित्र के दर्पण (नालेज) में दिखायी दे रहा है? सभी के पास दर्पण तो है। कर्मातीत चित्र देख सकते हो ना? देख रहे हो अपना चित्र? कितनी सुन्दर ‘राज्यसभा’ है! कर्मातीत स्टेज का तख्त कितना श्रेष्ठ तख्त है! इसी स्टेज की अधिकारी आत्मायें अर्थात् तख्तनशीन आत्मायें विश्व के आगे इष्टदेव के रूप में प्रत्यक्ष होंगी। स्वराज्य अधिकारी सभा अर्थात् इष्टदेव सभा। सभी अपने को ऐसे इष्टदेव आत्मा समझते हो? ऐसे परम पवित्र, सर्व प्रति रहमदिल, सर्व प्रति मास्टर वरदाता, सर्व प्रति मास्टर रूहानी स्नेह-सागर, सर्व प्रति शुभ भावनाओं के सागर, ऐसे पूज्य इष्टदेव आत्मा हो। सभी ब्राह्मण-आत्माओं में नम्बरवार यह सब संस्कार समाये हुए हैं, लेकिन इमर्ज रूप में अभी तक कम हैं। अभी इस इष्ट-देवात्मा के संस्कार इमर्ज करो। वर्णन करने के साथ ‘स्मृति स्वरूप’ सो समर्थ स्वरूप बन, स्टेज पर आओ।

3.5. डबल पार्ट बजायेंगे

कर्मबन्धनी आत्मायें जहाँ हैं वहाँ ही कार्य कर सकती हैं और कर्मातीत आत्मायें एक ही समय पर चारों ओर अपना सेवा का पार्ट बजा सकती हैं क्योंकि कर्मातीत हैं। कर्मातीत आत्मा को डबल पार्ट बजाने में कोई मुश्किल नहीं। स्पीड बहुत तीव्र होती है। सेकण्ड में जहाँ चाहे वहाँ पहुँच सकती हैं। विशेष आत्मायें अपना विशेष पार्ट सदा बजाती हैं।

3.6. कर्मयोगी बन कर्मभोग चुक्नु करेंगे

(अ) योग से कर्मभोग को मुस्कराते हुए सूली से काँटा कर भस्म करना अर्थात् कर्मभोग को समाप्त करना है, व्याधि का रूप न बने। जो व्याधि का रूप बन जाता है वह स्वयं सदा व्याधि का ही वर्णन करता रहेगा। मन में भी वर्णन

विनाश की ताली व सीटी बजे और आप अपनी स्टेज पर स्थित हो जाओ जैसे कि सिंहासन पर समीप आ गये और सिर्फ चढ़कर बैठना ही बाक़ी रह जाये अर्थात् सीटी बजे और सीट पर बैठ जाओ। जैसे चेयर्स (Chairs; कुर्सियों) का खेल होता है ना ? दौड़ते रहते हैं, सीटी बजी और कुर्सी पर बैठ गये। जिसने कुर्सी ली वह विजयी, नहीं तो हार। यहाँ भी कुर्सी का खेल चल रहा है।

3.9. कभी नाराज़ नहीं होगा

आज की सर्व आत्माओं का सम्बन्ध, बन्धन में सदा स्वयं को किसी-न-किसी प्रकार से परेशान करता रहेगा, दुःख की लहर अनुभव करायेगा, उदासी का अनुभव करायेगा। विनाशी प्राप्तियाँ होते भी अल्प काल के लिए वह प्राप्तियों का सुख अनुभव करेगा। सुख के साथ-साथ अभी-अभी प्राप्ति-स्वरूप का अनुभव होगा, अभी-अभी प्राप्तियाँ होते भी अप्राप्ति स्थिति का अनुभव होगा। भरपूर होते भी अपने को खाली-खाली अनुभव करेगा। सब कुछ होते हुए भी 'कुछ और चाहिए' - ऐसे अनुभव करता रहेगा और जहाँ 'चाहिए-चाहिए' है वहाँ कभी भी सन्तुष्टता नहीं रहेगी। मन भी राज़ी, तन भी राज़ी रहे, दूसरे भी राज़ी रहें - यह सदा हो नहीं सकता। कोई-न-कोई बात पर स्वयं से नाराज़ या दूसरों से नाराज़ न चाहते भी होता रहेगा। क्योंकि नाराज़ अर्थात् न राज़ अर्थात् राज़ को नहीं समझा। अधिकारी बन कर्मेन्द्रियों से कर्म कराने का राज़ नहीं समझा। तो नाराज़ ही होगा ना! कर्मातीत कभी नाराज़ नहीं होगा क्योंकि वह कर्मसम्बन्ध और कर्मबन्धन के राज़ को जानता है। कर्म करो लेकिन वशीभूत होकर नहीं, अधिकारी मालिक होकर करो।

भी अच्छा, ड्रामा भी अच्छा। यह बन्धन को काटने की कैंची का काम करती है। बन्धन कट गये तो 'कर्मातीत' हो गये ना! कल्याणकारी बाप के बच्चे होने के कारण संगमयुग का हर सेकण्ड कल्याणकारी है। हर सेकण्ड का आपका धन्धा ही कल्याण करना है, सेवा ही कल्याण करना है। ब्राह्मणों का आक्यूपेशन (Occupation; धंधा) ही है— विश्व-परिवर्तक, विश्व-कल्याणी। ऐसे निश्चयबुद्धि आत्मा के लिए हर घड़ी निश्चित कल्याणकारी है। समझा ?

3.7. योग में मगन अवस्था प्राप्त होगी और विघ्न-विनाशक हो रहेंगे

मनन करना— यह सेकण्ड स्टेज है, लेकिन मनन करते हुए मगन रहना— यह फ़र्स्ट स्टेज है। मगन रहने वाले स्वतः ही निर्विघ्न तो रहते ही हैं, लेकिन उससे भी ऊँची विघ्न-विनाशक स्थिति रहती है अर्थात् स्वयं निर्विघ्न बन, औरों के भी विघ्न-विनाशक बन सहयोगी बनते हैं। अनुभव सबसे बड़ी-ते-बड़ी अथार्टी है। अनुभव की अथार्टी से बाप समान मास्टर आलमाइटी अथार्टी (Master Almighty Authority) की स्थिति का अनुभव करते हैं। मगन अवस्था वाले अपने अनुभव के आधार से औरों को निर्विघ्न बनाने के एग्ज़ाम्पल (Example; उदाहरण स्वरूप) बनते हैं क्योंकि कमजोर आत्मायें उन्हीं के अनुभव को देख स्वयं भी हिम्मत रखती हैं, उत्साह में आती हैं — हम भी ऐसे बन सकते हैं। मगन रहने वाली आत्मायें बाप समान होने के कारण स्वतः ही बेहद के वैराग वृत्ति वाली, बेहद के सेवाधारी और बेहद के प्राप्ति के नशे में रहने वाले सहज बन जाते हैं। मगन रहने वाली आत्मायें सदा कर्मातीत अर्थात् कर्मबन्धन से न्यारी और सदा बाप की प्यारी हैं।

3.8. हर आत्मा को यथार्थ रूप से पहचानेंगे

कर्मातीत की स्थिति वाला ही हर आत्मा को यथार्थ परख सकता है और दूसरों को प्राप्ति करा सकता है। तो ऐसी स्टेज अपने समीप अनुभव करते हो या कि अभी तक यह स्टेज बहुत दूर है? सामने है या समीप है? इतने समीप है कि अभी-अभी चाहो तो वहाँ पहुँच जाओ अथवा उसको भी अभी समीप ला रहे हो ?

कर्मातीत अवस्था से लाभ

डा। तो इस समय के आप सभी के अनुभव की यह बातें हैं जो कहानियों में बनायी हुई हैं। एक सेकण्ड में ऑर्डर (Order; आज्ञा) किया हुआ हुँचो, तो वहाँ पहुँच जायेगा। ऐसा अपना अनुभव करते जाते हो? जैसे आज इंटरनेट भी स्पीड को क्विक (Quick; तेज) करने में लगी हुई है। जहाँ तक क्विकता है 'समय कम और सफलता ज़्यादा' का पुरुषार्थ कर रहे हैं। ऐसे ही आप लोगों का पुरुषार्थ भी हर बात में स्पीड को बढ़ाने का चल रहा है। जितना जितनी जिसकी स्पीड बढ़ेगी उतना ही अपने फाइनल स्टेज के नज़दीक आयेगी। स्पीड से स्टेज तक पहुँचेंगे। अपनी स्पीड से स्टेज को परख सकते हो।

3. संगमयुग पर निराकार बाप समान कर्मातीत, निराकारी स्थिति का अनुभव होगा और 21 जन्म ब्रह्मा बाप समान सर्वगुण सम्पन्न, सम्पूर्ण निर्विकारी श्रेष्ठ जीवन का अनुभव होगा

यह संगमयुग होली जीवन का युग है। तो रंग में रंग गये अर्थात् अविनाशक बन गया, जो मिटाने की आवश्यकता नहीं। सदाकाल के लिए बाप बन गये। संगमयुग पर निराकार बाप समान कर्मातीत, निराकारी स्थिति का अनुभव करते हो और 21 जन्म ब्रह्मा बाप समान सर्वगुण सम्पन्न, सम्पूर्ण निर्विकारी श्रेष्ठ जीवन का समान अनुभव करते हो। तो आगे की है 'संग के रंग' में बाप समान बनना। ऐसा पक्का रंग हो जो समान बन

4. सेवा फास्ट होगी

इस (कर्मातीत) अवस्था से सेवा भी फास्ट होगी। क्यों? एक ही समय पर मनसा शक्तिशाली, वाचा शक्तिशाली, सम्बन्ध-सम्पर्क में चाल और शक्तिशाली। एक ही समय पर तीनों सेवा बहुत फास्ट रिजल्ट निकालेंगे। ऐसे नहीं समझो कि इस साधना में सेवा कम होगी, नहीं। सफलता सहज आयेगी और सभी जो भी सेवा के निमित्त हैं अगर संगठित रूप में ऐसी स्टेज तक आये तो मेहनत कम और सफलता ज़्यादा होगी।

4. कर्मातीत अवस्था से लाभ

4.1. कम खर्चा बाला नशीन

इस (कर्मातीत) स्टेज पर स्थित रहने से 'कम खर्च बाला नशीन' बनेंगे। समय रूपी खज़ाना, एनर्जी का खज़ाना और स्थूल खज़ाने में 'कम खर्च बाला नशीन' हो जायेंगे। इसके लिए एक शब्द याद रखो। वह कौन-सा है? बैलेन्स (Balance; सन्तुलन)। हर कर्म में, हर संकल्प और बोल, सम्बन्ध वा सम्पर्क में बैलेन्स हो। तो बोल, कर्म, संकल्प, सम्बन्ध वा सम्पर्क साधारण के बजाय अलौकिक दिखायी देगा अर्थात् चमत्कारी दिखायी देगा। हर एक के मुख से, मन से यही आवाज़ निकलेगा कि यह तो चमत्कार है। समय के प्रमाण स्वयं के पुरुषार्थ की स्पीड (Speed; रफ़्तार) और विश्व-सेवा की स्पीड तीव्र गति की चाहिए, तब विश्व-कल्याणकारी बन सकेंगे।

4.2. अन्तःवाहक शरीर सैर करने का वाहन बन जायेगा

एक सेकण्ड में कितना दूर-से-दूर जा सकते हो? हिसाब निकाल सकते हो? जैसे मरने के बाद आत्मा एक सेकण्ड में कहाँ पहुँच जाती है! ऐसे आप भी अन्तःवाहक शरीर द्वारा, अन्तःवाहक शरीर जो कहते हैं उसका भावार्थ क्या है? आप लोगों का जो गायन है कि अन्तःवाहक शरीर द्वारा बहुत सैर करते थे, उसका अर्थ क्या है? यह गायन सिर्फ दिव्य-दृष्टि वालों का नहीं है लेकिन तुम सभी का है। वह लोग तो अन्तःवाहक शरीर का अपना अर्थ बताते हैं। लेकिन यथार्थ अर्थ यही है कि अन्त के समय की जो आप लोगों की कर्मातीत अवस्था की स्थिति है वह जैसे वाहन होता है। कोई-न-कोई वाहन द्वारा सैर किया जाता है। कहाँ का कहाँ पहुँच जाते हैं! वैसे जब कर्मातीत अवस्था बन जाती है तो यह स्थिति होने से एक सेकण्ड में कहाँ का कहाँ पहुँच सकते हैं! इसलिए अन्तःवाहक शरीर कहते हैं। वास्तव में यह अन्तिम स्थिति का गायन है। उस समय आप इस स्थूल स्वरूप के भान से परे रहते हो, इसलिए इनको सूक्ष्म शरीर भी कह दिया है। जैसे कहावत है— उड़ने वाला

हैं। ब्रह्मा बाप ने ऐसे सूक्ष्म सहारे चेक किये।

5.2. सेवा-साथी का सहारा

सब से ज़्यादा सहारा दो प्रकार का देखा। एक अति सूक्ष्म स्वरूप— किसी-न-किसी सेवा के साथी का सूक्ष्म सहारा देखा। इसमें भी अनेक प्रकार देखे। सेवा के सहयोगी होने के कारण, सेवा में वृद्धि करने के निमित्त बने हुए होने के कारण या विशेष कोई विशेषता, विशेष गुण होने के कारण, विशेष कोई संस्कार मिलने के कारण वा समय-प्रति-समय कोई एक्स्ट्रा मदद देने के कारण, ऐसे कारणों से सेवा का साथी है, सहयोगी है लेकिन विशेष झुकाव होने के कारण सूक्ष्म लगाव का रूप बनता जाता है। इसका परिणाम क्या होता है, यह भूल जाते हैं कि यह बाप की देन है। समझते हैं यह बहुत अच्छा सहयोगी है, अच्छा विशेषता स्वरूप है, गुणवान है। लेकिन समय-प्रति-समय बाप ने ऐसा अच्छा बनाया है — यह भूल जाता है। संकल्प मात्र भी किसी आत्मा के तरफ बुद्धि का झुकाव है तो वह झुकाव सहारा बन जाता है। तो साकार रूप में सहयोगी होने के कारण समय पर बाप के बदले, पहले वह याद आयेगा। दो-चार मिनट भी अगर स्थूल सहारा स्मृति में आया, तो बाप का सहारा उस समय याद होगा? दूसरी बात, अगर दो-चार मिनट के लिए भी याद की यात्रा का लिंक टूट गया तो टूटने के बाद जोड़ने की फिर मेहनत करनी पड़ेगी। क्योंकि निरन्तर में अन्तर पड़ गया ना! दिल में दिलाराम के बदले और किसी की तरफ, किसी भी कारण से दिल का झुकाव होता है। इससे बात करना अच्छा लगता है, इससे बैठना अच्छा लगता है, “इसी से ही”, यह शब्द माना दाल में काला है। “इसी से ही” का ख्याल आना माना हीनता आयी। ऐसे तो सब अच्छे लगते हैं लेकिन इस से ज़्यादा अच्छा लगता है! सब से रूहानी स्नेह रखना, बोलना या सेवा में सहयोग लेना वा देना वह दूसरी बात है। विशेषता देखो, गुण देखो लेकिन “इसी का ही” यह गुण बहुत अच्छा है, यह बीच में न लाओ। “यह ही” शब्द गड़बड़ करता है। इसको ही लगाव कहा जाता है। फिर चाहे बाहर का रूप सेवा हो, ज्ञान हो, योग हो, लेकिन जब “इसी से ही” योग

5. कर्मातीत बनने में आने वाली बाधायें

5.1. हृद के सहारे का भरोसा

बापदादा ने भी आज चारों ओर के सच्चे ब्राह्मणों के स्थानों की परिक्रमा लगायी। सभी बच्चों के स्थान भी देखे और स्थिति भी देखी। स्थान भिन्न-भिन्न विधिपूर्वक सजे हुए थे। कोई स्थूल साधनों से आकर्षण करने वाले थे, कोई तपस्या के वायब्रेशन से आकर्षण करने वाले थे। कोई त्याग और श्रेष्ठ भाग्य अर्थात् सादगी और श्रेष्ठता इस वायुमण्डल से आकर्षण करने वाले थे। कोई-कोई साधारण स्वरूप में भी दिखायी दिये। सभी ईश्वरीय याद के स्थान भिन्न-भिन्न रूप के देखे। स्थिति क्या देखी? इसमें भी भिन्न-भिन्न प्रकार के ब्राह्मण-बच्चों की स्थिति देखी। समय प्रमाण बच्चों की तैयारी कहाँ तक है— यह देखने के लिए ब्रह्मा बाप गये थे। ब्रह्मा बाप बोले — बच्चे सर्व बन्धनों से बन्धनमुक्त, योगयुक्त, जीवनमुक्त, एवररेडी हैं; सिर्फ समय का इन्तज़ार है। ऐसे तैयार हैं। इन्तज़ाम हो गया है सिर्फ समय का इन्तज़ार है। बापदादा की रूह-रूहान चली। शिव बाप बोले— चक्कर लगाके देखा तो बन्धनमुक्त कहाँ तक बने हैं? योगयुक्त कहाँ तक बने हैं? क्योंकि बन्धनमुक्त आत्मा ही जीवनमुक्त का अनुभव कर सकती है। कोई भी हृद का सहारा नहीं अर्थात् बन्धनों से किनारा है। अगर किसी भी प्रकार का छोटा-बड़ा, स्थूल वा सूक्ष्म मनसा से वा कर्म से हृद का कोई भी सहारा है तो बन्धनों से किनारा नहीं हो सकता। तो यह दिखाने के लिए ब्रह्मा बाप को आज विशेष सैर कराया। क्या देखा? मैजारटी बड़े-बड़े बन्धनों से मुक्त हैं। जो स्पष्ट दिखायी देने वाले बन्धन हैं वा रस्सियाँ हैं उनसे तो किनारा कर लिया है, लेकिन अभी कोई-कोई ऐसे अति सूक्ष्म बन्धन वा रस्सियाँ रही हुई हैं जिनको महीन बुद्धि के सिवाय देख वा जान भी नहीं सकते हैं। जैसे आजकल के साइंस वाले सूक्ष्म वस्तुओं को पॉवरफुल ग्लास द्वारा देख सकते हैं, साधारण रीति से नहीं देख सकते। ऐसे सूक्ष्म परखने की शक्ति द्वारा उन सूक्ष्म बन्धनों को देख सकते वा महीन बुद्धि द्वारा जान सकते हैं। अगर ऊपर-ऊपर के रूप से देखें तो न देखने वा जानने के कारण वह अपने को बन्धनमुक्त ही समझते रहते

5.4. रॉयल धागों को जानो, सोनी हिरण को नहीं चाहो

जिसको यह सहारे समझते हैं वह सहारा नहीं है, लेकिन यह रॉयल धागा है। जैसे सोनी हिरण का मिसाल है ना! सीता को कहाँ ले गया? तो सोना हिरण यह बन्धन है। इसको सोना समझना माना अपने श्रेष्ठ भाग्य को खोना। सोना नहीं है, खोना है। राम को खोया, अशोक वाटिका को खोया।

6. कर्मातीत बनने के लिए क्या पुरुषार्थ करें?

6.1. इन स्मृतियों में रहो

(अ) डबल पोजिशन कौन-सा है? (डीटी पोजिशन और गॉडली पोजिशन)। डीटी पोजिशन (देवत्व) से इस समय का गॉडली (ईश्वरीय) पोजिशन हाइएस्ट है। तो एक यह पोजिशन है कि गॉडली चिल्ड्रेन हैं, ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ भी हैं। यह हुआ साकारी पोजिशन और दूसरा है निराकारी पोजिशन।

एक है हम सभी आत्माएँ हीरो पार्टधारी आत्मायें, श्रेष्ठ आत्मायें हैं और दूसरा पोजिशन है ईश्वरीय सन्तान ब्रह्माकुमार-कुमारीपन का। यह दोनों पोजिशन स्मृति में रहें तो कर्म और संकल्प दोनों ही श्रेष्ठ हो जायेंगे। श्रेष्ठ आत्मा अथवा हीरो अपने को समझने से ऐसा कोई व्यवहार नहीं करेंगे जो ईश्वरीय मार्यादाओं के वा ब्राह्मण कुल की मर्यादा के विपरीत हो। इसलिए यह दोनों पोजिशन स्मृति में होंगी तो माया की आपोजिशन खत्म हो जायेगी। इसलिए डबल पोजिशन भी सदैव स्मृति में रखो।

(आ) सभी अवतरित होने वाले अवतार हो। इसी स्मृति में सदा हर कर्म करते, कर्म के बन्धनों से मुक्त कर्मातीत अवतार हो। अवतार ऊपर से श्रेष्ठ कर्म के लिए नीचे आते हैं। आप सभी भी ऊँची ऊपर की स्थिति से नीचे अर्थात् देह का आधार ले, सेवा के प्रति कर्म करने के लिए पुरानी देह में, पुरानी दुनिया में आते हो। लेकिन स्थिति ऊपर की रहती है, इसलिए अवतार हो। अवतार सदा परमात्म-पैगाम ले आते हैं। आप सभी संगमयुगी श्रेष्ठ आत्मायें भी परमात्म-पैगाम देने के लिए, परमात्म-मिलन कराने के लिए अवतरित हुए हो। यह देह अब

करना है, “इसका ही” योग अच्छा है! यह “ही” शब्द नहीं आना चाहिए। “यह ही” सेवा में सहयोगी हो सकता है...। “यह ही” साथी चाहिए... तो समझा, लगाव की निशानी क्या है? इसलिए “यह ही” निकाल दो। सभी अच्छे हैं। विशेषता देखो। सहयोगी बनो भी, बनाओ भी लेकिन पहले थोड़ा होता है फिर बढ़ते-बढ़ते विकराल रूप हो जाता है। फिर खुद ही उससे निकलना चाहते तो निकल नहीं सकते। क्योंकि पक्का धागा हो जाता है। पहले बहुत सूक्ष्म होता, फिर पक्का हो जाता है तो टूटना मुश्किल हो जाता। सहारा एक बाप है। कोई मनुष्य-आत्मा सहारा नहीं है। बाप किसको भी सहयोगी निमित्त बनाता है, लेकिन बनाने वाले को नहीं भूलो। बाप ने बनाया है। बाप बीच में आने से ‘जहाँ बाप होगा वहाँ पाप नहीं’! बाप बीच से निकल जाता तो पाप होता है। तो एक बात है यह सहारे की।

5.3. साकार साधनों का सहारा

दूसरी बात – कोई-न-कोई साकार साधनों को सहारा बनाया है। साधन है तो सेवा है। साधन में थोड़ा नीचे-ऊपर हुआ, तो सेवा भी नीचे-ऊपर हुई। साधनों को कार्य में लगाना, वह अलग बात है। लेकिन साधनों के वश हो सेवा करना—यह है साधनों को सहारा बनाना। साधन सेवा की वृद्धि के लिए हैं। इसलिए उन साधनों को उसी प्रमाण कार्य में लाओ। साधनों को आधार नहीं बनाओ। आधार एक बाप है। साधन तो विनाशी हैं। विनाशी साधनों को आधार बनाना अर्थात् जैसे साधन विनाशी हैं वैसे स्थिति भी कभी बहुत ऊँची, कभी बीच की, कभी नीचे की बदलती रहेगी। अविनाशी, एकरस स्थिति नहीं रहेगी। तो दूसरी बात – विनाशी साधनों को सहारा, आधार नहीं समझो। यह निमित्त मात्र है, सेवा के प्रति है। सेवा-अर्थ कार्य में लगाया और न्यारे। साधनों के आकर्षण में मन आकर्षित नहीं होना चाहिए। तो यह दो प्रकार के सहारे, सूक्ष्म रूप में आधार बना हुआ देखा।

का निशाना और दूसरा— निर्विकारी स्टेज, जिसमें मनसा की भी निर्विकारीपन की स्टेज बनानी पड़ती है। तो एक है निराकारी निशाना और दूसरा है साकारी। तो निराकारी और निर्विकारी— यह हैं दो निशाने। सारा दिन पुरुषार्थ योगी और पवित्र बनने का करते हो ना ? जब तक पूरी रीति आत्म-अभिमानि न बने हैं तो निर्विकारी भी नहीं बन सकते। तो निर्विकारीपन का निशाना और निराकारीपन का निशाना, जिसको फ़रिश्ता कहो, कर्मातीत स्टेज कहो। लेकिन फ़रिश्ता भी तब बनेंगे जब कोई भी इमप्योरिटी अर्थात् पाँच तत्वों की आकर्षण आकर्षित नहीं करेगी। ज़रा भी मनसा संकल्प भी इमप्योअर अर्थात् अपवित्रता का न हो, तब फ़रिश्तेपन की निशानी में टिक सकेंगे। तो वह डबल निशाना भी सदैव स्मृति में रखना।

6.3. कर्म की गुह्य गति जान कर अर्थात् त्रिकालदर्शी बन कर हर कर्म करो

कोई भी कर्म करने के पहले जो बापदादा द्वारा विशेष शक्तियों की सौगात मिली है उनको काम में नहीं लाते हो, सिर्फ देखते-सुनते खुश होते हो; परन्तु समय पर काम में न लाने कारण कमी रह जाती है। हर कर्म करने के पहले मास्टर त्रिकालदर्शी बनकर कर्म नहीं करते हो। अगर मास्टर त्रिकालदर्शी बन हर संकल्प करो वा वचन बोलो, तो बताओ कब भी कर्म व्यर्थ वा अनर्थ वाला हो सकता है ? कर्म करने के समय कर्म के वश हो जाते हो। त्रिकालदर्शी अर्थात् साक्षीपन की स्थिति में स्थित होकर इन कर्म-इन्द्रियों द्वारा कर्म नहीं करते हो, इसलिए वशीभूत हो जाते हो। वशीभूत होना अर्थात् भूतों का आह्वान करना। कर्म करने के बाद पश्चाताप होता है। लेकिन उससे क्या हुआ ? कर्म की गति वा कर्म का फल तो बन गया ना ? तो कर्म और कर्म के फल के बन्धन में फँसने के कारण कर्म-बन्धनी आत्मा अपनी ऊँची स्टेज को पा नहीं सकती है। तो सदैव यह चेक करो कि आये हैं कर्मबन्धनों से मुक्त होने के लिए, लेकिन मुक्त होते-होते कर्मबन्धन युक्त तो नहीं हो जाते हो ? ज्ञानस्वरूप होने के बाद वा मास्टर नालेजफुल, मास्टर सर्वशक्तिवान होने के बाद अगर

आप की देह नहीं रही, देह भी बाप को दे दी। सब तेरा कहा अर्थात् मेरा कुछ नहीं। यह देह सेवा के अर्थ बाप ने लोन (Loan; उधार) में दी है। लोन में मिली हुई वस्तु पर मेरे-पन का अधिकार हो नहीं सकता। जब मेरी देह नहीं, तो देह का भान कैसे आ सकता? आत्मा भी बाप की बन गयी, देह भी बाप की हो गयी तो मैं और मेरा आप का कहाँ से आया? मैं-पन सिर्फ एक बेहद का रहा— मैं बाप का हूँ। जैसा बाप वैसा मैं मास्टर हूँ। तो यह बेहद का मैं-पन रहा। हद का मैं-पन विघ्नों में लाता है। बेहद का मैं-पन निर्विघ्न, विघ्न विनाशक बनाता है। ऐसे ही हद का मेरा-पन मेरे-मेरे के फेरे में लाता है और बेहद का मेरा-पन जन्मों के फेरों से छुड़ाता है।

(इ) बेहद का मेरा-पन है — “मेरा बाबा”। तो हद छूट गयी ना! अवतार बन देह का आधार ले सेवा के कर्म में आओ। बाप ने लोन अर्थात् अमानत दी है सेवा के लिए। इसको और कोई व्यर्थ कार्य में लगा नहीं सकते। नहीं तो अमानत में खयानत का खाता बन जाता है। अवतार व्यर्थ खाता नहीं बनाता। आया, सन्देश दिया और गया। आप सभी भी सेवा-अर्थ सन्देश देने-अर्थ ब्राह्मण-जन्म में आये हो। ब्राह्मण-जन्म अवतरित जन्म है। साधारण जन्म नहीं। तो सदा अपने को अवतरित हुई विश्व-कल्याणकारी, सदा श्रेष्ठ अवतरित आत्मा हैं — इसी निश्चय और नशे में रहो। टैम्पेरी समय के लिए आये हो और फिर जाना भी है। अब जाना है— यह सदा रहता है? अवतार हैं, आये हैं, अब जाना है— यही स्मृति उपराम और अपरम-अपार प्राप्ति की अनुभूति कराने वाली है। एक तरफ उपराम, दूसरे तरफ अपरम-अपार प्राप्ति— दोनों अनुभव साथ-साथ रहते हैं। ऐसे अनुभवीमूर्त हो ना! अच्छा।

6.2. मंज़िल अथवा निशाना सदा सामने रखो

अच्छा डबल निशाना कौन-सा है? जो डबल नशा होगा वही डबल निशाना होगा। एक है निराकारी निशाना। सदैव अपने को निराकारी देश के निवासी समझना और निराकारी स्थिति में स्थित रहना। साकार में रहते हुए अपने को निराकारी समझकर चलना। एक— सोल-कान्सेस वा आत्म-अभिमानी बनने

फाइनल पेपर के समय सफलता मूर्त बनने नहीं देगा। वातावरण हो तब याद की यात्रा हो, परिस्थिति न हो तब स्थिति हो अर्थात् परिस्थिति के आधार पर स्थिति व किसी भी प्रकार का साधन हो तब सफलता हो, ऐसा पुरुषार्थ फाइनल पेपर में फेल (Fail; नापास) कर देगा। इसलिए स्वयं को बाप समान कर्मातीत बनाने की तीव्र गति करो।

6.5. ईश्वरीय नशे में रहो

आप श्रेष्ठ आत्मायें ज्ञान सागर बाप द्वारा डायरेक्ट सर्व प्राप्ति करने वाली हो और जो भी आत्मायें हैं वह श्रेष्ठ आत्माओं के द्वारा कुछ-न-कुछ प्राप्ति करती हैं, लेकिन आप डायरेक्ट बाप द्वारा सर्व प्राप्ति करने वाले हो, ऐसा श्रेष्ठ नशा रहता है? जितना नशा कम होगा तो निशाना भी दूर दिखायी देगा। इस ईश्वरीय नशे में भी सब कुछ भूल जाता है ना! तो इस ईश्वरीय नशे में रहने से सदा काल के लिए पुरानी दुनिया भूल जाती है। इस नशे में कोई नुकसान नहीं, जितना नशा चढ़ाओ उतना अच्छा। उस नशे को तो ज़्यादा पिया तो ख़त्म हो जाते, यहाँ इस नशे से अविनाशी बन जाते। जो नशे में रहते हैं उनको देखने वाले भी अनुभव करते कि यह नशे में हैं, ऐसे आपको भी देख यह अनुभव करें कि यह नशे में हैं। अभी-अभी नशा चढ़ा अभी-अभी उतरा तो जो मज़ा आना चाहिए वह नहीं आयेगा, इसलिए सदा नशे में मस्त रहो, इस नशे में सर्व प्राप्ति हैं। एक बाप दूसरा न कोई— यह स्मृति ही नशा चढ़ाती है। इसी स्मृति से समर्थी आ जाती।

6.6. चलते-फिरते लाइट-हाउस का अनुभव करो

विनाश के समय पेपर में पास होना है तो सर्व परिस्थितियों का सामना करने के लिए लाइट-हाउस होना पड़े, चलते-फिरते अपना यह रूप अनुभव होना चाहिए। यह प्रैक्टिस करनी है। शरीर बिल्कुल भूल जाये। अगर कोई काम भी करना है, चलना है, बात करनी है वह भी निमित्त आकारी लाइट का रूप धारण कर करना है। जैसे पार्ट बजाने के समय चोला धारण करते हो,

6.8. पूरा मरजीवा बनो

बापदादा सर्व निमित्त बने हुए सेवाधारियों को किस रूप में देखना चाहते हैं— यह जानते हो? बापदादा सर्व सेवाधारियों को सदा अपने समान! जैसे बाप कर्त्तव्य के कारण अवतरित होते हैं, वैसे हर सेवाधारी सेवा के प्रति अवतरित होने वाले सब अवतार बन जायें। एक अवतार ड्रामा अनुसार सृष्टि पर आता, तो कितना परिवर्तन कर लेता! वह भी आत्मिक शक्ति वाले और यह इतने परमात्म-शक्ति स्वरूप चारों ओर अवतार अवतरित हो जायें तो क्या हो जायेगा? सहज परिवर्तन हो जायेगा। जैसे बाप लोन लेता है, बन्धन में नहीं आता, जब चाहे आयें जब चाहें चले जायें, निर्बन्धन हैं। ऐसे सब सेवाधारी शरीर के, संस्कारों के, स्वभाव के बन्धनों से मुक्त, जब चाहें जैसे चाहें वैसा संस्कार अपना बना सकें। जैसे देह को चलाने चाहें वैसे चला सकें, जैसा स्वभाव बनाने चाहें वैसा बना सकें। ऐसा नहीं कि मेरा स्वभाव ही ऐसा है क्या करूँ? मेरा संस्कार, मेरा बन्धन ऐसा है, नहीं। लेकिन ऐसे निर्बन्धन जैसे बाप निर्बन्धन है। कई सोचते हैं, लेकिन यह बन्धन है क्या? अब तो शरीर आपका है ही नहीं, फिर बन्धन आपका कहाँ से आया? जब मरजीवा बन गये तो शरीर किसका हुआ? तन-मन-धन तीनों अर्पण किया है या सिर्फ दो को अर्पण किया, एक को नहीं। जब मेरा तन ही नहीं, मेरा मन ही नहीं तो बन्धन हो सकता है? यह भी कमज़ोरी के बोल हैं— क्या करें जन्म-जन्म के संस्कार हैं, शरीर का हिसाब-किताब है। लेकिन अब पुराने जन्म का पुराना खाता संगमयुग पर समाप्त हुआ। नया शुरू किया। अभी उधर का पुराना रजिस्टर समाप्त हुआ, नया शुरू किया। अभी उधर का पुराना रजिस्टर समाप्त हो गया या अभी तक सम्भाल कर रखा है? खत्म नहीं किया है क्या? तो समझा बापदादा क्या देखना चाहते हैं!

6.9. अनादि-आदि स्वरूप में स्थित रहो

मूलवतन की स्थिति में स्थित हो ऊपर से नीचे आओ। नीचे से ऊपर नहीं जाओ। है ही परमधाम निवासी आत्मा, सतोप्रधान आत्मा। अपने आदि, अनादि स्वरूप में रहो। अन्त की स्मृति में नहीं रहो, अनादि आदि स्वरूप में। फिर

कार्य समाप्त हुआ चोला उतारा। एक सेकण्ड में धारण करेंगे, एक सेकण्ड में न्यारे हो जायेंगे। जब यह प्रैक्टिस पक्की हो जायेगी, फिर यह कर्मभोग समाप्त होगा। जैसे इंजेक्शन लगा कर दर्द को खत्म कर देते हैं। ऐसे ही यह स्मृति-स्वरूप का इंजेक्शन लगा कर और देह की स्मृति से गायब हो जायें। स्वयं भी अपने को लाइट रूप अनुभव करो तो दूसरे भी वही अनुभव करेंगे। अन्तिम सर्विस, अन्तिम स्वरूप (कर्मातीत अवस्था) यही है। इससे सारे कारोबार भी लाइट अर्थात् हल्के होंगे।

6.7. डबल लाइट बन कर रहो

जैसे साकार में आना और जाना सहज हो गया है, अभी- अभी आये और अभी-अभी गये, तो जैसे साकार में सहज प्रैक्टिस हो गयी है आने-जाने की, वैसे आत्मा को अपनी कर्मातीत अवस्था में रहने की भी प्रैक्टिस है? अभी-अभी कर्मयोगी बन कर्म में आना, कर्म समाप्त हुआ फिर कर्मातीत अवस्था में रहना, इसका भी अनुभव सहज होता है? जैसे लक्ष्य रखते हो मधुबन जाना है, फिर तैयार कर पहुँच जाते; वैसे यह भी सदा लक्ष्य रहे कि कर्मातीत अवस्था में रहना है, निमित्त मात्र कर्म करने के लिए कर्मयोगी बने, फिर कर्मातीत। कर्मातीत— इसके लिए तैयारी कौन-सी करनी है? डबल लाइट बनो। तो डबल लाइट बनना आता है ना! ट्रस्टी समझना अर्थात् लाइट बनना। दूसरा — आत्मा समझना अर्थात् लाइट होना। तो यह तैयारी करने तो आती है ना! यही अटेन्शन रखने से फिर सेकण्ड में कर्मातीत, सेकण्ड में कर्मयोगी। जैसे कर्म में आना स्वाभाविक हो गया है, वैसे कर्मातीत होना भी स्वाभाविक हो जाये। यही तो अभ्यास है ना! जो सदा याद और सेवा में रहने वाले हैं उन्हीं को प्रत्यक्षफल सहज प्राप्त होता है। सोचेंगे भी नहीं कि ऐसा हो सकता है, लेकिन सहज अनुभव होते रहेंगे। चलते-चलते ऐसे अनुभव करेंगे जैसे भक्तिमार्ग में कहावत है, “भगवान छप्पर फाड़कर देते हैं।” तो यहाँ भी मेहनत का छप्पर फाड़कर सहज अनुभूति होगी।

हज़ूर, जी हाज़िर” करती हुई चलती हैं? आप राज्य-अधिकारियों का सदा स्वागत अर्थात् सलाम करती रहती हैं? राजा के आगे सारी प्रजा सिर झुका कर सलाम करती है?

6.12. सर्व हदों से पार, बेहद स्वरूप में रहो

आज बेहद का बाप, बेहद की स्थिति में स्थित रहने वाले, बेहद की बुद्धि, बेहद की दृष्टि, बेहद की वृत्ति, बेहद के सेवाधारी ऐसे – श्रेष्ठ बच्चों से साकार स्वरूप में, साकार वतन में, बेहद के स्थान पर मिलने आये हैं। सारे ज्ञान का वा इस पढ़ाई की चारों ही सब्जेक्ट का मूल सार यही एक बात – “बेहद” है। बेहद शब्द के स्वरूप में स्थित होना यही फर्स्ट और लास्ट का पुरुषार्थ है। पहले बाप का बनना अर्थात् मरजीवा बनना। इसका भी आधार है— देह की हद से ‘बेहद देही स्वरूप’ में स्थित होना और लास्ट में फ़रिश्ता स्वरूप बन जाना है। इसका भी अर्थ है— सर्व हद के रिश्ते से परे फ़रिश्ता बनना। तो आदि और अन्त, पुरुषार्थ और प्राप्ति, लक्षण और लक्ष्य, स्मृति और समर्थी दोनों ही स्वरूप में क्या रहा? “बेहद”। आदि से लेकर अन्त तक किन-किन प्रकार की हदें पार कर चुके हो वा करनी हैं – इस लिस्ट को तो अच्छी तरह से जानते हो ना! जब सर्व हदों से पार बेहद स्वरूप में, बेहद घर, बेहद के सेवाधारी, सर्व हदों के ऊपर विजय प्राप्त करने वाले विजयी रत्न बन जाते तब ही अन्तिम कर्मातीत स्वरूप का अनुभव स्वरूप बन जाते। हद हैं अनेक, बेहद है एक। अनेक प्रकार की हदें अर्थात् अनेक “मेरा-मेरा”। एक मेरा बाबा, दूसरा न कोई— इस बेहद के मेरे में अनेक मेरा समा जाता है। विस्तार, सार स्वरूप बन जाता है। विस्तार मुश्किल होता है या सार मुश्किल होता है? तो आदि और अन्त का पाठ क्या हुआ? –बेहद। इसी अन्तिम मंज़िल पर कहाँ तक समीप आये हैं, इसको चेक करो। हद की लिस्ट सामने रख देखो कहाँ तक पार किया है!

क्या हो जायेगा ? स्वयं भी निर्बन्धन और जिन्हों की सेवा के निमित्त बने हो वह भी निर्बन्धन हो जायेंगे। नहीं तो वह भी कोई-न-कोई बन्धन में बँध जाते हैं। स्वयं निर्बन्धन अवतरित हुई आत्मा समझ कर कर्म करो, तो और भी आपको फालो करेंगे। जैसे साकार बाप को देखा, क्या याद रहा ? बाप के साथ मैं भी कर्मातीत स्थिति में हूँ या देवताई बचपन रूप में; अनादि, आदि रूप सदा स्मृति में रहा। तो फालो फादर।

6.10. जगतमाता का अनुभव कराओ

जैसे बाप के लिए सबके मुख से एक ही आवाज़ निकलती है – “मेरा बाबा”। ऐसे आप हर श्रेष्ठ आत्मा के प्रति यह भावना हो, महसूसता हो, जो हरेक समझे कि यह – ‘मेरी माँ’ है। यह बेहद की पालना। हरेक से मेरे-पन की भावना आये। हरेक समझे कि यह मेरे शुभचिन्तक, सहयोगी सेवा के साथी हैं। इसको कहा जाता है— ‘बाप समान’। इसको ही कहा जाता है— कर्मातीत स्टेज के तख्तनशीन। जो सेवा के कर्म के भी बन्धन में न आओ। हमारा स्थान, हमारी सेवा, हमारे स्टूडेंट, हमारी सहयोगी आत्मायें— यह भी सेवा के कर्म का बन्धन है। इस कर्मबन्धन से भी ‘कर्मातीत’। तो समझा इस वर्ष क्या करना है ? कर्मातीत बनना है और “यह वही हैं, यही सब कुछ हैं,” यह महसूसता दिलाये, आत्माओं को समीप लाना है। ठिकाने पर लाना है।

6.11. कर्मेन्द्रियजीत बनो

हे कर्मेन्द्रियों के राज्यधारी, अपनी राज्यसत्ता अनुभव करते हो ? राज्यसत्ता श्रेष्ठ है वा कर्मेन्द्रियों अर्थात् प्रजा की सत्ता श्रेष्ठ है ? प्रजा-पति बने हो ? क्या अनुभव करते हो ? स्टॉप कहा और स्टॉप हो गया। ऐसे नहीं कि आप कहो स्टॉप और वह स्टार्ट हो जाये। सिर्फ हर कर्मेन्द्रिय की शक्ति को आँख से इशारा करो तो इशारे से ही जैसे चाहो वैसे चला सको। ऐसे कर्मेन्द्रिय जीत बनें तब फिर प्रकृतिजीत बन कर्मातीत स्थिति के आसनधारी सो विश्व राज्य-अधिकारी बनेंगे। तो अपने से पूछो, पहली पौढ़ी— कर्मेन्द्रियजीत बने हैं ? हर कर्मेन्द्रिय “जी

बन्धन भी समाप्त हो गया। देह आपकी नहीं है। बाप को दे दिया तो बाप की हुई। जब आपका निजी बन्धन, मेरा शरीर या मेरी देह— यह बन्धन समाप्त हुआ। मेरी देह कहेंगे क्या? आपका अधिकार है? दी हुई वस्तु पर आपका अधिकार कैसे हुआ? दे दी है वा रख ली है? कहना तेरा और मानना मेरा— यह तो नहीं है ना?

जब तेरा कहा तो मेरे-पन का बन्धन समाप्त हो गया। यह हृद का मेरा— यही मोह का धागा है। धागा कहो, जंजीर कहो, रस्सी कहो— यह बन्धन में बाँधता है। जब सब कुछ आपका है— यह सम्बन्ध जोड़ लिया तो बन्धन समाप्त हो सम्बन्ध बन जाता है।

(आ) बापदादा ने कमाई का साधन सिर्फ यही सिखाया है कि बिन्दी लगाते जाओ, तो सभी को बिन्दी लगाने आती है? या कभी खिसक जाती है, कभी लग जाती है? सबसे सहज बिन्दी लगाना है। कोई इन आँखों से ब्लाइन्ड भी हो, वह भी अगर कागज़ पर पेन्सिल रखेगा तो बिन्दी लग जाती है और आप तो त्रिनेत्री हो, इसलिए इन तीन बिन्दियों को सदा यूज़ करो। क्वेश्चन मार्क कितना टेढ़ा है! लिख कर देखो, टेढ़ा है ना? और बिन्दी कितनी सहज है! इसलिए बापदादा भिन्न-भिन्न रूप से बच्चों को समान बनाने की विधि सुनाते रहते हैं। विधि है ही बिन्दी। और कोई विधि नहीं है। अगर विदेही बनते हो तो भी विधि है— बिन्दी बनना। अशरीरी बनते हो, कर्मातीत बनते हो, तो भी विधि है— बिन्दी बनना। सबकी विधि बिन्दी है।

6.15. मालिक और बालक बनने का पक्का अभ्यास करो

आप सबका लक्ष्य क्या है? कर्मातीत बनना है ना! या थोड़ा-थोड़ा कर्मबन्धन रहा तो कोई हर्जा नहीं? रहना चाहिए या नहीं रहना चाहिए? कर्मातीत बनना है? बाप से प्यार की निशानी है— कर्मातीत बनना। तो 'करावनहार' होकर कर्म करो, कराओ। कर्मेन्द्रियाँ आप से नहीं करावें, लेकिन आप कर्मेन्द्रियों से कराओ। बिल्कुल अपने को न्यारा समझ कर्म कराना— यह कान्सेसनेस इमर्ज रूप में हो। मर्ज रूप में नहीं। मर्ज रूप में कभी 'करावनहार' के बजाय कर्मेन्द्रियों के अर्थात् मन के, बुद्धि के, संस्कार के वश हो जाते हैं।

6.13. अब से एवररेडी रहने का अभ्यास करो

बहुतकाल से अर्थात् अब से ही एवररेडी रहने का अभ्यास चाहिए। तीव्र गति वाले कर्मार्थी, समाधान स्वरूप सदा रहने का अभ्यास नहीं करेंगे तो तीव्र गति के समय देने वाले बनने के बजाय देखने वाले बनना पड़े। तीव्र पुरुषार्थी बहुत काल वाले तीव्रगति की सेवा के निमित्त बन सकेंगे। यह है वानप्रस्थ अर्थात् सर्व बन्धनमुक्त, न्यायी और बाप के साथ-साथ तीव्र गति की सेवा की प्यारी अवस्था। तो अब देने वाले बनने का समय है, ना कि अब भी स्वयं प्रति, समस्याओं प्रति लेने वाले बनने का समय है।

6.14. बिन्दु बनो और बिन्दु बाप से सर्व सम्बन्धों का मिलन मनाओ

(अ) आज भाग्य-विधाता बाप सर्व भाग्यवान बच्चों से मिलने आये हैं। भाग्य-विधाता बाप सभी बच्चों को भाग्य बनाने की अति सहज विधि बता रहे हैं—सिर्फ बिन्दु के हिसाब को जानो। बिन्दु का हिसाब सबसे सहज है। बिन्दु के महत्व को जाना और महान बने। सबसे सहज और महत्वशाली बिन्दु का हिसाब सभी अच्छी तरह से जान गये हो ना! बिन्दु कहना और बिन्दु बनना। बिन्दु बन, बिन्दु बाप को याद करना है। बिन्दु थे और अब बिन्दु स्थिति में स्थित हो, बिन्दु बाप समान बन मिलन मनाना है। यह मिलन मनाने का युग, उड़ती कला का युग कहा जाता है। ब्राह्मण जीवन है ही मिलने और मनाने के लिए। इसी विधि द्वारा सदा कर्म करते हुए कर्मों के बन्धन से मुक्त, कर्मार्थी स्थिति का अनुभव करते हो। कर्म के बन्धन में नहीं आते, लेकिन सदा बाप के सर्व सम्बन्ध में रहते हो। करावनहार बाप निमित्त बनाये करा रहे हैं, तो स्वयं साक्षी बन गये। इसलिए इस सम्बन्ध की स्मृति बन्धनमुक्त बना देती है। जहाँ सम्बन्ध से करते, वहाँ बन्धन नहीं होता। मैंने किया, यह सोचा तो सम्बन्ध भूला और बन्धन बना! संगमयुग बन्धनमुक्त, सर्व सम्बन्धयुक्त, जीवनमुक्त स्थिति के अनुभव का युग है। तो चेक करो— सम्बन्ध में रहते हो या बन्धन में आते? सम्बन्ध में स्नेह के कारण प्राप्ति है, बन्धन में खींचातान, टेन्शन के कारण दुःख और अशान्ति की हलचल है। इसलिए जब बाप ने 'बिन्दु' का सहज हिसाब सिखा दिया, तो देह का

किया ? कि बाप कार्य करते भी शरीर में होते हुए भी अशरीरी स्थिति में चलते-फिरते अनुभव होता रहा। चाहे कर्म का हिसाब भी चुक्त्तू करना पड़ा लेकिन साक्षी हो, न स्वयं कर्म के हिसाब के वश रहे, न औरों को कर्म के हिसाब-किताब चुक्त्तू होने का अनुभव कराया। आपको मालूम पड़ा कि ब्रह्मा बाप अव्यक्त हो रहा है ? नहीं मालूम पड़ा ना ! तो इतना न्यारा, साक्षी, अशरीरी अर्थात् कर्मातीत स्टेज बहुत काल से अभ्यास की, तब अन्त में भी वही स्वरूप अनुभव हुआ। यह बहुत काल का अभ्यास काम में आता है। ऐसे नहीं सोचो कि अन्त में देहभान छोड़ देंगे, नहीं। बहुत काल का अशरीरी-पन का, देह से न्यारा, करावनहार स्थिति का अनुभव चाहिए। अन्त काल— चाहे जवान है, चाहे बूढ़ा है, चाहे तन्दुरूस्त है, चाहे बीमार है— किसका भी कभी भी आ सकता है। इसलिए बहुत काल का अभ्यास साक्षीपन का अटेन्शन दो। चाहे कितनी भी प्राकृतिक आपदायें आयेंगी लेकिन यह अशरीरी-पन की स्टेज आपको सहज न्यारा और बाप का प्यारा बना देगी। इसलिए बहुत काल शब्द को बापदादा अण्डरलाइन करा रहे हैं। क्या भी हो, सारे दिन में साक्षीपन की स्टेज का, करावनहार की स्टेज का, अशरीरी-पन की स्टेज का अनुभव बार-बार करो, तब अन्त मते फ़रिश्ता सो देवता निश्चित है।

6.18. प्लान बनाओ

सम्पन्न बनने का प्लान बनाओ। धुन लगाओ, कर्मातीत बनना ही है। कुछ भी हो जाये बनना ही है, करना ही है, होना ही है। साइंस वालों का भी आवाज़, विनाश करने वालों का भी आवाज़ बाप के कानों पर आते हैं, वह भी कहते हैं क्यों रोकते हैं, क्यों रोकते हैं। एडवांस पार्टी भी कहती है डेट फिक्स करो, डेट फिक्स करो। ब्रह्मा बाप भी कहते हैं डेट फिक्स करो। तो यह मीटिंग करो। बापदादा को अभी डेट चाहिए, ऐसे नहीं हो जायेगा, कर रहे हैं, यह नहीं। यह बहुत हो गया। पहले बच्चे डेट देवें फिर बाप फाइनल करेंगे।

कारण ? 'करावनहार' आत्मा हूँ, मालिक हूँ, विशेष आत्मा हूँ, मास्टर सर्वशक्तिवान आत्मा हूँ— यह स्मृति मालिकपन की स्मृति दिलाती है। नहीं तो कभी मन आप को चलाता और कभी आप मन को चलाते। इसीलिए सदा नेचुरल मन्मनाभव की स्थिति नहीं रहती। मैं अलग हूँ बिल्कुल और सिर्फ अलग नहीं लेकिन मालिक हूँ। बाप को याद करने से मैं बालक हूँ और मैं आत्मा कराने वाली हूँ तो मालिक हूँ। अभी यह अभ्यास अटेन्शन में कम है। सेवा में बहुत अच्छा लगे हुए हो लेकिन लक्ष्य क्या है ? सेवाधारी बनने का वा कर्मातीत बनने का ? कि दोनों साथ-साथ बनेंगे ? ये अभ्यास पक्का है ? अभी-अभी थोड़े समय के लिए यह अभ्यास कर सकते हो ? अलग हो सकते हो ? या ऐसे अटैच हो गये हो जो डिटैच होने में टाइम चाहिए ? कितने टाइम में अलग हो सकते हो ? 5 मिनट चाहिएँ, एक मिनट चाहिए वा एक सेकण्ड चाहिए ? एक सेकण्ड में हो सकते हो ?

6.16. रोज़ दरबार लगाओ

कर्मातीत बनके साथ चलेंगे ना ! साथ चलना अर्थात् साथी बनकर चलना । जोड़ी तो अच्छी चाहिए या लम्बी और छोटी ? समान चाहिए ना ! तो कर्मातीत बनना ही है । तो क्या करेंगे ? अभी अपना राज्य अच्छी तरह से सम्भालो । रोज़ अपनी दरबार लगाओ । राज्य अधिकारी हो ना ! तो अपनी दरबार लगाओ, कर्मचारियों से हालचाल पूछो । चेक करो वे ऑर्डर में हैं ? ब्रह्मा बाप ने भी रोज़ दरबार लगायी है । काँपी है ना ! ब्रह्मा बाप ने भी मेहनत की, रोज़ दरबार लगायी तब कर्मातीत बने । तो अभी कितना टाइम चाहिए ? या एवररेडी हो ?

6.17. बहुत काल का अभ्यासी बनो

ब्रह्मा बाप का दूसरा अनुभव भी सुना है कि यह कर्मेन्द्रियाँ कर्मचारी हैं । तो रोज़ रात की कचहरी सुनी है ना ! तो मालिक बन इन कर्मेन्द्रियों रूपी कर्मचारियों से हालचाल पूछा है ना ! तो जैसे ब्रह्मा बाप ने यह अभ्यास फाउण्डेशन बहुत पक्का किया, इसलिए जो बच्चे लास्ट में भी साथ रहे उन्होंने क्या अनुभव

मुक्त बने हैं? कभी भी कोई कमजोर स्वभाव-संस्कार वा पिछला संस्कार-स्वभाव वशीभूत बनाता है तो बन्धनयुक्त हैं, बन्धनमुक्त नहीं। ऐसे नहीं सोचना कि चाहते नहीं हैं लेकिन स्वभाव या संस्कार करा देते हैं। यह भी निशानी बन्धनमुक्त की नहीं, लेकिन बन्धनयुक्त की है। और बात— कोई भी सेवा की, संगठन की, प्रकृति की परिस्थिति, स्व-स्थिति को वा श्रेष्ठ स्थिति को डगमग करती है, यह भी बन्धनमुक्त स्थिति नहीं है। इस बन्धन से भी मुक्त।

(3) तीसरी बात — पुरानी दुनिया में, पुराने अन्तिम शरीर में किसी भी प्रकार की व्याधि अपनी श्रेष्ठ स्थिति को हलचल में लाये— इससे भी मुक्त। एक है व्याधि आना, एक है व्याधि हिलाना। तो आना— यह भावी है, लेकिन स्थिति हिल जाना— यह बन्धनयुक्त की निशानी है। स्व-चिन्तन, ज्ञान-चिन्तन, शुभ-चिन्तक बनने का चिन्तन बदल शरीर की व्याधि का चिन्तन चलना — इससे मुक्त। क्योंकि ज़्यादा प्रकृति का चिन्तन, चिन्ता के रूप में बदल जाता है। तो इससे मुक्त होना— इसी को ही कर्मातीत स्थिति कहा जाता है। इन सभी बन्धनों को छोड़ना— यही कर्मातीत स्थिति की निशानी है। ब्रह्मा बाप ने इन सभी बन्धनों से मुक्त हो कर्मातीत स्थिति को प्राप्त किया। तो आज का दिवस ब्रह्मा बाप समान कर्मातीत बनने का दिवस है। आज के दिवस का महत्व समझा ? अच्छा।

(इ) बापदादा सभी बच्चों के रूप-बसन्त— दोनों के बैलेन्स देख रहे हैं। बसन्त बनना और रूप में स्थित होना। दोनों की समानता है? जैसे बसन्त अर्थात् वाणी में आने की बहुत प्रैक्टिस है, ऐसे वाणी से परे जाने का अभ्यास है? सर्व कर्मेन्द्रियों के कर्म की स्मृति से परे एक ही आत्मिक स्वरूप में स्थित हो सकते हो? कर्म खींचता है या कर्मातीत अवस्था खींचती है? देखना, सुनना, सुनाना— ये विशेष कर्म जैसे सहज अभ्यास में आ गये हैं, ऐसे ही कर्मातीत बनने की स्टेज अर्थात् कर्म को समेटने की शक्ति से अकर्मी अर्थात् कर्मातीत बन सकते हो? एक है कर्म-अधीन स्टेज, दूसरी है कर्मातीत अर्थात् कर्म-अधिकारी स्टेज। ज़्यादा समय कौन-सी स्टेज रहती है? बापदादा हरेक संगमयुगी

6.19. भक्तों की पुकार सुनो, उन पर रहम करो

(अ) बहुत दुःखी हैं। बापदादा को अभी इतना दुःख देखा नहीं जाता है। पहले तो आप शक्तियों को, देवता रूप पाण्डवों को रहम आना चाहिए। कितना पुकार रहे हैं! अभी आवाज़ पुकार का आपके कानों में गूँजना चाहिए। समय की पुकार का प्रोग्राम करते हो ना! अभी भक्तों की पुकार भी सुनो, दुःखियों की पुकार भी सुनो। अभी थोड़ी-थोड़ी पुकार सुनो तो सही, बेचारे बहुत पुकार रहे हैं, जिगर से पुकार रहे हैं, तड़प रहे हैं। साइंस वाले भी बहुत चिल्ला रहे हैं कब करें, कब करें, कब करें, पुकार रहे हैं।

(आ) आपका गीत है दुःखियों पर कुछ रहम करो। सिवाय आपके कोई रहम नहीं कर सकता। इसलिए अभी समय प्रमाण रहम के मास्टर सागर बनो। स्वयं पर भी रहम, अन्य आत्माओं प्रति भी रहम। अभी अपना यही स्वरूप लाइट हाउस बन भिन्न-भिन्न लाइट्स की किरणें दो। सारे विश्व की अप्राप्त आत्माओं को प्राप्ति की अंचली की किरणें दो। अच्छा।

6.20. अपने पुरुषार्थ के मार्ग में यह चेकिंग करते रहो

(अ) चेक करो कर्म करते-करते कर्म के बन्धन में तो नहीं आ जाते? बहुत न्यारा और प्यारा चाहिये। समझा क्या अभ्यास चाहिये? मुश्किल तो नहीं लगता है ना? कि थोड़ा-थोड़ा मुश्किल लगता है? कर्मेन्द्रियों के मालिक हो ना? राजयोगी अपने को कहलाते हो, किसके राजा हो?

(आ) आज का दिन हृद के मेरे-मेरे से मुक्त होने का अर्थात् कर्मार्थी होने का अव्यक्ति दिवस मनाओ। इसी को ही स्नेह का सबूत कहा जाता है। कर्मार्थी बनना यह लक्ष्य तो सबका अच्छा है। अब चेक करो – कहाँ तक कर्मों के बन्धन से न्यारे बने हो?

(1) पहली बात – लौकिक और अलौकिक, कर्म और सम्बन्ध दोनों में स्वार्थ भाव से मुक्त।

(2) दूसरी बात – पिछले जन्मों के कर्मों के हिसाब-किताब वा वर्तमान पुरुषार्थ के कमज़ोरी के कारण किसी भी व्यर्थ स्वभाव-संस्कार के वश होने से

कर देगा और सदा सुख के संसार में सुख के शान्ति के झूले में झूलते रहेंगे। इसको ही कहा जाता है— सर्व कामना जीत, जगतजीत।

7. कर्मातीत बनने के लिए सहायक अवस्थायें

7.1. कर्मयोगी स्थिति

7.1.1. कर्मयोग का अर्थ

(अ) जैसे दुनिया वाले कहते हैं कि कर्म ही योग है। कर्म और योग अलग नहीं मानते। कर्म ही योग मानते हैं। कर्म से योग लगाना, इसी को ही कर्मयोग समझते हैं। लेकिन कर्म और योग दोनों का बैलेन्स चाहिये। कर्म में बिज़ी रहना योग नहीं है। कर्म करते योग का अनुभव होना चाहिये। कर्म में बिज़ी हो जाते हैं तो कर्म ही श्रेष्ठ हो जाता है, योग किनारे हो जाता है। चलते-चलते यही अलबेलापन आता है। तो कर्म में योग का अनुभव होना— इसको कहा जाता है कर्मयोग।

(आ) सभी अपने को सहजयोगी अनुभव करते हो? सहज की निशानी क्या है? उसमें मेहनत नहीं होगी। वह सदा होगी, निरन्तर होगी और सहज होगी। जो सहज होगा वह स्वतः और निरन्तर चलता रहेगा। तो सहज योगी अर्थात् निरन्तर योगी। कभी साधारण, कभी योगी— ऐसे नहीं। योगी जीवन है तो जीवन सदा होता है। इसलिए योग लगाने वाले नहीं, लेकिन योगी जीवन वाले। ब्राह्मण जीवन है तो योग कभी नीचे-ऊपर हो ही नहीं सकता। क्योंकि सिर्फ योगी नहीं हो, लेकिन कर्मयोगी हो। तो कर्म के बिना एक सेकण्ड भी रह नहीं सकते। अगर सोये भी हो, तो सोने का कर्म तो कर रहे हो ना! तो जैसे कर्म के बिना रह नहीं सकते, ऐसे योगी जीवन वाले योग के बिना रह नहीं सकते। योग का सहज अर्थ ही है याद। तो याद किसकी आती है? जो प्यारा लगता है। सारे दिन में देखो कि याद अगर आती है तो प्यारी चीज़ होती है। तो सब से प्यारे-

कर्मन्द्रियोजीत, स्वराज्यधारी, राज्य-अधिकारी राजाओं से पूछते हैं कि—

- (1) हरेक की राज्य करोबार ठीक चल रही है?
- (2) हरेक राज्य-अधिकारी रोज़ अपनी राज-दरबार लगाते हैं?
- (3) राज्य-दरबार में राज्य-करोबारी अपने कार्य की रिज़ल्ट देता है?
- (4) हरेक कारोबारी आप राज्य-अधिकारी के ऑर्डर में है?
- (5) कोई भी कारोबारी ख्यानत व मिलावट (अमानत में ख्यानत) व किसी भी प्रकार की खिट-खिट तो नहीं करते हैं?
- (6) कभी आप राज्य-अधिकारी को धोखा तो नहीं देते हैं?
- (7) चलने के बजाय चलाने तो नहीं लग जाते हैं?
- (8) आप राज्य-अधिकारियों का राज्य है या प्रजा का प्रजा राज्य है? ऐसी चेकिंग करते हो या जब दुश्मन आता है तब होश आता है?
- (9) रोज़ अपनी दरबार लगाते हो या कभी-कभी दरबार लगाते हो? क्या हाल है आपके राज्य-दरबारियों का? राज्य-कारोबार ठीक है? इतना अटेन्शन देते हो? अभी के राजा ही जन्म-जन्मान्तर के राजा बनेंगे।
- (10) आपकी दासी ठीक कार्य कर रही है? सब से बड़े-से-बड़ी दासी है— प्रकृति। प्रकृति रूपी दासी ठीक कार्य कर रही है?
- (11) प्रकृतिजीत के ऑर्डर प्रमाण अपना कार्य कर रही है? प्रकृतिजीत प्रकृति के ऑर्डर में तो नहीं आ जाते?
- (12) आपके राज्य-दरबार की मुख्य ८ सहयोगी शक्तियाँ आपके कार्य में सहयोग दे रही हैं? राज्य करोबार की शोभा हैं— ये अष्ट शक्तियाँ अर्थात् अष्ट रत्न, अष्ट सहयोगी। तो आठों ही ठीक हैं? अपनी रिज़ल्ट चेक करो।

(ई) चेक करो — ज़रा भी संकल्प मात्र भी अभिमान वा अपमान की भावना रह तो नहीं गयी है? जहाँ अभिमान और अपमान की भावना है, वह कभी भी स्वमान की स्थिति में स्थित हो नहीं सकता। स्वमान सर्व कामनाओं से किनारा

सभी को अच्छा लगता है। उसके सहयोगी बहुत बन जाते हैं। तो दुआयें भी मिलती हैं, सहयोग भी मिलता है। तो जहाँ दुआयें हैं, सहयोग है वहाँ सफलता तो है ही। तो कितनी प्राप्ति है? बहुत प्राप्ति हुई ना! इसलिये सदा कर्मयोगी। जब योग होगा तो कर्म स्वतः ही श्रेष्ठ होगा क्योंकि योग का अर्थ ही है श्रेष्ठ बाप की स्मृति में रहना और स्वयं भी श्रेष्ठ आत्मा हूँ— इस स्मृति में रहना। तो जब स्मृति श्रेष्ठ होगी तो स्थिति भी श्रेष्ठ होगी ना! और स्थिति श्रेष्ठ होने के कारण न चाहते भी वायुमण्डल श्रेष्ठ बन जाता है।

(ऊ) कर्मयोगी अर्थात् श्रेष्ठ स्मृति, श्रेष्ठ स्थिति और श्रेष्ठ वायुमण्डल। कोई ज्ञान सुने, नहीं सुने; योग सीखे, नहीं सीखे लेकिन वायुमण्डल का प्रभाव स्वतः ही उनको आकर्षित करता है। मधुबन में क्या विशेष अनुभव करते हो? तपस्या का वायुमण्डल है ना! तो जो भी आते हैं उनका योग बिना मेहनत के ही लग जाता है। योग लगाना नहीं पड़ता, योग लग ही जाता है। ऐसे होता है ना! मधुबन में योग लगाने की मेहनत नहीं करनी पड़ती क्योंकि वायुमण्डल तपस्या का है, संग तपस्वी आत्माओं का है। ऐसे जहाँ भी आप कर्मयोगी बन कर्म करते हो वहाँ का वातावरण, वायुमण्डल ऐसे औरों को सहयोग देगा। अनुभवी हो ना, सहयोग मिलता है ना? तो आपका सहयोग भी औरों को मिलेगा। जहाँ रहते हो वहाँ सेवा होती है। सदा कर्मयोगी आत्मा बाप को भी प्रिय है, तो विश्व को भी प्रिय है।

(ए) आज बापदादा ने चारों ओर के सेवा की गति देखी। साथ में स्व-पुरुषार्थ की भी गति को देखा। तो सेवा और स्व-पुरुषार्थ दोनों के गति में क्या देखा होगा? आप जानते हो? सेवा की गति तीव्र है वा स्व-पुरुषार्थ की गति तीव्र है? क्या है? दोनों का बैलेन्स है? नहीं है? तो विश्व परिवर्तन की आत्माओं को वा प्रकृति को ब्लैसिंग कब मिलेगी? क्योंकि बैलेन्स से जो आप सभी को ब्लैसिंग्स मिली हैं वह औरों को मिलेगी। तो अन्तर क्यों? कहलाते क्या हो— कर्मयोगी वा सिर्फ योगी? कर्मयोगी हो ना! पक्का है ना? तो सेवा भी कर्म है ना! कर्म में आते हो, बोलते हो वा दृष्टि देते हो, कोर्स कराते हो, म्युज़ियम

से-प्यारा कौन है? (बाबा) तो सहज और स्वतः याद आयेगा ना! अगर कहाँ भी, चाहे देह में, देह के सम्बन्ध में, पदार्थ में प्यार होगा तो बाप के बदले में वो याद आयेगा। कभी-कभी देह से प्यार हो जाता तो बॉडी-कान्शियस (Body-conscious; देह-अभिमानी) हो जाते हो। तो चेक करना है कि सिवाय बाप के और कोई आकर्षित करने वाली वस्तु या व्यक्ति तो नहीं है?

(इ) कर्मयोगी अर्थात् हर सेकण्ड, हर संकल्प, हर बोल सदा श्रेष्ठ है। तो सहज योगी अर्थात् कर्मयोगी और कर्मयोगी अर्थात् सहजयोगी।

(ई) कोई भी कार्य करते बाप की याद में लवलीन रहो। लवलीन आत्मा कर्म करते भी न्यारी रहेगी। कर्मयोगी अर्थात् याद में रहते हुए कर्म करने वाला सदा कर्मबन्धनमुक्त रहता है। ऐसे अनुभव होगा जैसे काम नहीं कर रहे हैं लेकिन खेल कर रहे हैं। किसी भी प्रकार का बोझ वा थकावट महसूस नहीं होगी। तो कर्मयोगी अर्थात् कर्म को खेल की रीति से न्यारे होकर करने वाला। ऐसे न्यारे बच्चे कर्मेन्द्रियों द्वारा कार्य करते बाप के प्यार में लवलीन रहने के कारण बन्धनमुक्त बन जाते हैं।

(उ) सदा अपने को कर्मयोगी आत्मायें अनुभव करते हो? कर्मयोगी अर्थात् हर कर्म योगयुक्त हो। कर्म अलग, योग अलग नहीं। कर्म में योग, योग में कर्म। सदा दोनों साथ हैं, तब कहते हैं कर्मयोगी। ऐसे नहीं, जब योग में बैठे तो योगी हैं और कर्म में जायें तो योग साधारण हो जाये और कर्म महान हो जाये। सदा दोनों का साथ रहे, बैलेन्स रहे। तो ऐसे कर्मयोगी हो या जब कर्म में लग जाते हो तो योग कम हो जाता है? और जब योग में बैठते हो तो लगता है कि बैठे ही रहें तो अच्छा है? कर्मयोगी आत्मा सदा ही कर्म और योग का साथ रखने वाली अर्थात् बैलेन्स रखने वाली। कर्म और योग का बैलेन्स है तो हर कर्म में बाप द्वारा तो ब्लैसिंग मिलती ही है लेकिन जिसके सम्बन्ध-सम्पर्क में आते हैं उनसे भी दुआयें मिलती हैं। कोई अच्छा काम करता है तो दिल से उसके लिए दुआयें निकलती हैं ना कि बहुत अच्छा है! तो बहुत अच्छा मानना—यह दुआयें है और जो अच्छा कार्य करता है उसके संग में रहना सदा

(ओ) जैसे बाप के गुणगान करते हो या चरित्र वर्णन करते हो, क्या वैसे ही अपने में वह सर्वगुण धारण किये हैं? अपने हर कर्म को चरित्र समान बनाया है? हर कर्म याद में स्थित रह करते हो? जो कर्म याद में रह कर करते हैं, वह कर्म यादगार बन जाता है। क्या ऐसे यादगार मूर्त अर्थात् कर्मयोगी बने हो? कर्मयोगी अर्थात् हर कर्म योगयुक्त, युक्तियुक्त, शक्तियुक्त हो। क्या ऐसे कर्मयोगी बने हो? या बैठने वाले योगी बने हो? जब विशेष रूप से योग में बैठते हो, उस समय योगी जीवन है अर्थात् योगयुक्त है या हर समय योगयुक्त है? जो वर्णन में है कर्मयोगी, निरन्तर योगी और सहजयोगी— क्या वही प्रैक्टिकल में है? अर्थात् एवर लास्टिंग (Robot; अविनाशी) है? क्या कर्मयोगी को कर्म आकर्षित करता है या योगी अपनी योगशक्ति से कर्म-इन्द्रियों द्वारा कर्म कराता है? अगर कर्मयोगी को कर्म अपनी तरफ आकर्षित कर ले, तो क्या ऐसे को योगी कहा जाय? जो कर्म के वश होकर चलने वाले हैं उनको क्या कहते हो? कर्मभोगी कहेंगे ना? जो कर्म के भोग के वश हो जाते हैं अर्थात् कर्म के भोग भोगने में अच्छे व बुरे में कर्म के वशीभूत हो जाते हैं। उनको कर्मभोगी कहेंगे।

7.1.2. कर्मयोगी के लक्षण

7.1.2.(1) न्यारा और प्यारा रहेगा

कर्मयोगी बन, कर्म करने वाले कभी भी कर्म के बन्धन में नहीं आते हैं, वे सदा बन्धनमुक्त-योगयुक्त होते। कर्मयोगी कभी अच्छे वा बुरे कर्म करने वाले व्यक्ति के प्रभाव में नहीं आते। ऐसा नहीं कि कोई अच्छा कर्म करने वाला कनेक्शन में आये तो उसकी खुशी में आ जाओ और कोई अच्छा कर्म न करने वाला सम्बन्ध में आये तो गुस्से में आ जाओ या उसके प्रति ईर्ष्या वा घृणा पैदा हो। यह भी कर्मबन्धन है। कर्मयोगी के आगे कोई कैसा भी आ जाये— स्वयं सदा न्यारा और प्यारा रहेगा। नॉलेज द्वारा जानेगा कि इसका यह पार्ट चल रहा है। घृणा वाले से स्वयं भी घृणा कर ले— यह हुआ कर्म का बन्धन। ऐसा कर्म के बन्धन में आने वाला एकरस नहीं रह सकता। कभी किसी रस में होगा, कभी

समझाते हो— यह सब श्रेष्ठ कर्म अर्थात् सेवा है। तो कर्मयोगी अर्थात् कर्म के समय भी योग का बैलेन्स। लेकिन आप खुद ही कह रहे हो कि बैलेन्स कम हो जाता है। इसका कारण क्या? अच्छी तरह से जानते भी हो, नयी बात नहीं है। बहुत पुरानी बात है। बापदादा ने देखा कि सेवा वा कर्म और स्व-पुरुषार्थ अर्थात् योगयुक्त। तो दोनों का बैलेन्स रखने के लिए विशेष एक ही शब्द याद रखो— वह कौन-सा? बाप 'करावनहार' है और मैं आत्मा, (मैं फलानी नहीं) 'करनहार' हूँ। तो 'करन-करावनहार', यह एक शब्द आपका बैलेन्स बहुत सहज बनायेगा।

(ऐ) बापदादा यह कह रहे हैं कि ब्रह्मा बाप से सबका प्यार तो है, इसीलिए तो अपने को क्या कहलाते हो? ब्रह्माकुमारी या शिवकुमारी? ब्रह्माकुमारी कहलाते हो ना! तो ब्रह्मा बाप से प्यार तो है ही ना! तो चलो अशरीरी बनने में थोड़ी मेहनत करनी भी पड़ती है, लेकिन ब्रह्मा बाप अभी किस रूप में है? (फ़रिश्ता रूप में है) तो ब्रह्मा से प्यार अर्थात् फ़रिश्ता रूप से प्यार। चलो बिन्दी बनना मुश्किल लगता है, फ़रिश्ता बनना तो उससे सहज है ना! सुनाओ, बिन्दी रूप से फ़रिश्ता रूप तो सहज है ना! फ़रिश्ता तो बन सकते हो ना! बिन्दी रूप में कर्म करते हुए कभी-कभी व्यक्त शरीर में आ जाना पड़ता है लेकिन बापदादा ने देखा कि साइंस वालों ने एक लाइट के आधार से रोबट (Robot) बनाया है, सुना है ना! चलो देखा नहीं, सुना तो है! वह लाइट के आधार से रोबट बनाया है और वह सब काम करता है और फास्ट गति से करता है लाइट के आधार से और साइंस का प्रत्यक्ष प्रमाण है। तो बापदादा कहते हैं क्या साइलेन्स की शक्ति से, साइलेन्स की लाइट से आप कर्म नहीं कर सकते? आप भी एक रूहानी रोबट की स्थिति तैयार करो, जिसको कहेंगे रूहानी कर्मयोगी, फ़रिश्ता कर्मयोगी। पहले आप तैयार हो जाना। ऐसे प्लान बनाओ। बापदादा ऐसे रूहानी चलते-फिरते कर्मयोगी फ़रिश्ते देखने चाहते हैं। अमृतवेले उठो, बापदादा से मिलन मनाओ, रूह-रूहान करो, वरदान लो। जो करना है वह करो। लेकिन बापदादा से रोज़ अमृतवेले 'कर्मयोगी फ़रिश्ता भव' का वरदान लेके फिर कामकाज़ में आओ।

है? कर्म करने के लिए नीचे नहीं आना पड़ेगा? कर्म करते हुए भी लीन हो सकते हैं? इतने होशियार हो गये हो?

7.1.2.(4) डबल फोर्स से कार्य करता रहेगा

कर्मयोगी बनने वाले को कर्म में भी साथ होने के कारण एक्स्ट्रा मदद मिल सकती है। क्योंकि एक से दो हो गये, तो काम बँट जायेगा ना! अगर एक काम कोई एक करे और दूसरा साथी बन जाये, तो वह काम सहज होगा या मुश्किल होगा? हाथ आपके हैं, बाप तो अपने हाथ-पाँव नहीं चलायेंगे ना! हाथ आपके हैं लेकिन मदद बाप की है, तो डबल फोर्स से काम अच्छा होगा ना! काम भल कितना भी मुश्किल हो, लेकिन बाप की मदद है ही सदा उमंग-उत्साह, हिम्मत, अथक-पन की शक्ति देने वाली। जिस कार्य में उमंग-उत्साह वा अथकपन होता है वह काम सफल होगा ना! तो बाप हाथों से काम नहीं करते, लेकिन यह मदद देने का काम करते हैं। तो कर्मयोगी जीवन अर्थात् डबल फोर्स से कार्य करने की जीवन। आप और बाप, प्यार में कोई मुश्किल वा थकावट फील नहीं होती।

7.1.2.(5) हर कर्म में स्वतः ही सफलता को प्राप्त करता है

हर कर्म करते 'कर्मयोगी आत्मा' अनुभव करते हो? कर्म और योग सदा साथ-साथ रहता है? कर्मयोगी हर कर्म में स्वतः ही सफलता को प्राप्त करता है। कर्मयोगी-आत्मा कर्म का प्रत्यक्षफल उसी समय भी अनुभव करता और भविष्य भी जमा करता, तो डबल फ़ायदा हो गया ना! ऐसे डबल फल लेने वाली आत्मायें हो।

7.1.2.(6) हर कार्य मनोरंजन और सहज अनुभव होगा

कर्मयोगी स्थिति अति प्यारी और न्यारी है। इससे कोई कितना भी बड़ा कार्य हो लेकिन ऐसे लगेगा जैसे काम नहीं कर रहे हैं लेकिन खेल कर रहे हैं। चाहे कितना भी मेहनत का सख्त खेल हो, फ़िर भी खेल में मज़ा आयेगा ना! जब मल्लयुद्ध करते हैं तो कितनी मेहनत करते हैं। लेकिन जब खेल समझकर करते

किसी रस में। इसलिए अच्छे को अच्छा समझकर साक्षी होकर देखो और बुरे को रहमदिल बन रहम की निगाह से परिवर्तन करने की शुभ भावना से साक्षी हो देखो। इसको कहा जाता है— 'कर्मबन्धन से न्यारे'। क्योंकि ज्ञान का अर्थ है समझ। तो समझ किस बात की? कर्म के बन्धनों से मुक्त होने की समझ को ही ज्ञान कहा जाता है। ज्ञानी कभी भी बन्धनों के वश नहीं होंगे। सदा न्यारे। ऐसे नहीं कभी न्यारे बन जाओ तो कभी थोड़ा-सा शोक (Shake; काँपना) आ जाये। सदा विकर्माजीत बनने का लक्ष्य रखो। कर्मबन्धनजीत बनना है। यह बहुत काल का अभ्यास बहुत काल की प्रालम्ब के निमित्त बनायेगा और अभी भी बहुत विचित्र अनुभव करेंगे। तो सदा के न्यारे और सदा के प्यारे बनो। यही बाप समान कर्मबन्धन से मुक्त स्थिति है।

7.1.2.(2) सदा खुशी और शक्ति का अनुभव करता रहेगा

स्वयं को कर्मयोगी श्रेष्ठ आत्मा अनुभव करते हो? कर्मयोगी-आत्मा सदा कर्म का प्रत्यक्षफल स्वतः ही अनुभव करती है। प्रत्यक्षफल— 'खुशी' और 'शक्ति'। तो कर्मयोगी-आत्मा अर्थात् प्रत्यक्षफल 'खुशी' और 'शक्ति' अनुभव करने वाली। बाप सदा बच्चों को प्रत्यक्षफल प्राप्त कराने वाले हैं। अभी-अभी कर्म किया, कर्म करते खुशी और शक्ति का अनुभव किया! तो ऐसी कर्मयोगी आत्मा हूँ— इसी स्मृति से आगे बढ़ते रहो।

7.1.2.(3) कर्म करते हुए भी लवलीन स्थिति का अनुभव करेगा

जब लवलीन हो जाते हो, स्नेह में समा जाते हो तो और कुछ याद रहता है? बाप और मैं समान, स्नेह में समाये हुए। सिवाय बाप के और कुछ है ही नहीं, तो दो से मिल कर एक हो जाते हैं। समान बनना अर्थात् समा जाना, एक हो जाना। तो ऐसे अनुभव है ना? कर्मयोग की स्थिति में ऐसे लीन का अनुभव कर सकते हो? क्या समझते हो? कर्मयोगी स्थिति अलग बैठ करके लीन हो सकते हो? मुश्किल है? कर्म भी करो और लीन भी रहो, हो सकता

सदा का अभ्यास किया। तो यह पहला पाठ— “मैं कौन ?” — इसका बार-बार अभ्यास चाहिए, चेकिंग चाहिए। ऐसे नहीं मैं तो हूँ ही आत्मा। अनुभव करे कि मैं आत्मा करावनहार बन कर्म करा रही हूँ, करनहार अलग है, करावनहार अलग है।

7.1.3.(2) जितना काम है उतना ही बोले

बापदादा ने देखा है कोई भी छोटी बात का वातावरण बनने का कारण जो बात करते हैं ना, वह ऐसे करते हैं जो जिसका उस बात से सम्बन्ध ही नहीं है, उनके भी कानों में पड़ती है। उनका भी व्यर्थ संकल्प चलना शुरू हो जाता है। इसलिए फ़रिश्ता अर्थात् जिसका काम वही सुने। जितना काम है उतना ही बोले, कहानी बनाके नहीं बोले। कथा नहीं करो। कथा हमेशा मिक्स भी होती है और लम्बी भी होती है। तो ब्रह्मा बाप के प्यार का रिटर्न है— ब्रह्मा बाप समान कर्मयोगी फ़रिश्ता भव।

7.2. न्यारे और प्यारे की अवस्था

(अ) ज्ञान सुनना-सुनाना, सेवा करना— यह अलग चीज़ हैं लेकिन न्यारे और प्यारे बनने का यह अभ्यास अति आवश्यक है। पास-विद्-ऑनर बनना है तो इस अभ्यास में पास होना अति आवश्यक है और इसी अभ्यास पर अटेन्शन देने में डबल अण्डरलाइन करो, तब ही डबल लाइट बन कर्मातीत स्थिति को प्राप्त कर डबल ताजधारी बनेंगे। ब्राह्मण बने, बाप के वर्से के अधिकारी बने, गॉडली स्टुडेन्ट बने, ज्ञानी-तू-आत्मा बने, विश्व सेवाधारी बने— यह भाग्य तो पा लिया लेकिन अब पास-विद्-ऑनर होने के लिए, कर्मातीत स्थिति के समीप जाने के लिए ब्रह्मा बाप समान न्यारे अशरीरी बनने के अभ्यास पर विशेष अटेन्शन। जैसे ब्रह्मा बाप ने साकार जीवन में कर्मातीत होने के पहले ‘न्यारे और प्यारे’ रहने के अभ्यास का प्रत्यक्ष अनुभव कराया। जो सभी बच्चे अनुभव सुनाते हो— सुनते हुए न्यारे, कार्य करते हुए न्यारे, बोलते हुए न्यारे रहते थे। सेवा को वा कोई कर्म को छोड़ा नहीं, लेकिन न्यारे हो लास्ट दिन भी बच्चों

हैं तो हँसते-हँसते करते हैं। मेहनत नहीं लगती, मनोरंजन लगता है। तो कर्मयोगी के लिए कैसा भी कार्य हो लेकिन मनोरंजन है, संकल्प में भी मुश्किल का अनुभव नहीं होगा। तो कर्मयोगी ग्रुप अपने कर्म से अनेकों का कर्म श्रेष्ठ बनाने वाले, इसी में बिज़ी रहो। कर्म और याद कम्बाइण्ड, अलग हो नहीं सकते।

7.1.2.(7) हर कर्म योगयुक्त और युक्तियुक्त होगा

कर्मयोगी-आत्मा का हर कर्म योगयुक्त, युक्तियुक्त होगा। अगर कोई भी कर्म युक्तियुक्त नहीं होता, तो समझो कि योगयुक्त नहीं है। अगर साधारण कर्म होता, व्यर्थ कर्म हो जाता तो भी निरन्तर योगी अथवा कर्मयोगी नहीं कहेंगे।

7.1.3. कर्मयोगी बनने के लिए पुरुषार्थ

7.1.3.(1) पहला पाठ पक्का करो

बापदादा ने देखा कि अमृतवेले मैजारिटी का याद और ईश्वरीय प्राप्तियों का नशा बहुत अच्छा रहता है। लेकिन कर्मयोगी की स्टेज में जो अमृतवेले का नशा है उससे अन्तर पड़ जाता है। कारण क्या है? कर्म करते, सोल-कान्सेस और कर्म-कान्सेस दोनों रहते हैं। इसकी विधि है कर्म करते मैं आत्मा— कौन-सी आत्मा, वह तो जानते ही हो, जो भिन्न-भिन्न आत्मा के स्वमान मिले हुए हैं, ऐसी आत्मा— करावनहार इन कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म कराने वाली हूँ, यह कर्मेन्द्रियाँ कर्मचारी हैं लेकिन कर्मचारियों से कर्म कराने वाली मैं करावनहार हूँ, न्यारी हूँ। क्या लौकिक में भी डायरेक्टर अपने साथियों से, निमित्त सेवा करने वालों से सेवा कराते, डायरेक्शन देते, ड्युटी बजाते भूल जाता है कि मैं डायरेक्टर हूँ? अपने को करावनहार शक्तिशाली आत्मा हूँ— यह आत्मा और शरीर, वह करनहार है और वह करावनहार है— यह स्मृति मर्ज हो जाती है। आप सबको, पुराने बच्चों को मालूम है कि ब्रह्मा बाप ने शुरू-शुरू में क्या अभ्यास किया? एक डायरी देखी थी ना! सारी डायरी में एक ही शब्द— “मैं आत्मा, जसोदा भी आत्मा, यह बच्चे भी आत्मा है, आत्मा है...” —यह फाउण्डेशन

का वाहन - न्यारे और प्यारे बनने का श्रेष्ठ साधन - सेवा के साधनों में भूल नहीं जाना। ख़ूब सेवा करो, लेकिन न्यारेपन की ख़ूबी को नहीं छोड़ना। अर्ध इसी अभ्यास की आवश्यकता है। या तो बिल्कुल न्यारे हो जाते या तो बिल्कुल प्यारे हो जाते। इसलिए 'न्यारे और प्यारेपन का बैलेन्स' रखो। सेवा करो लेकिन 'मेरे-पन' से न्यारे होकर करो। समझा क्या करना है? अब नयी-नयी रस्सियाँ भी तैयार कर रहे हैं। पुरानी रस्सियाँ टूट रही हैं। समझते भी नयी रस्सियाँ बाँध रहे हैं क्योंकि चमकीली रस्सियाँ हैं। तो इस वर्ष क्या करना है? बापदादा साक्षी होकर के बच्चों का खेल देखते हैं। रस्सियों के बन्धने की रेस में एक-दो से बहुत आगे जा रहे हैं। इसलिए सदा विस्तार में जाते सार रूप में रहो।

7.3. साक्षी स्थिति

सदा हर कार्य करते स्वयं को साक्षी स्थिति में स्थित रख कार्य कराने वाली न्यारी आत्मा हूँ- ऐसा अनुभव करते हो? साक्षीपन की स्थिति सदा हर कार्य सहज सफल करती है। साक्षीपन की स्थिति कितनी प्यारी लगती है! साक्षी बन कार्य करने वाली आत्मा सदा न्यारी और बाप की प्यारी है। तो इसी अभ्यास से कर्म करने वाली अलौकिक आत्मा हूँ, अलौकिक अनुभूति करने वाली, अलौकिक जीवन श्रेष्ठ जीवन वाली आत्मा हूँ- यह नशा रहता है ना? कर्म करते यही अभ्यास बढ़ाते रहो। यही अभ्यास कर्मातीत स्थिति को प्राप्त करा देगा। इसी अभ्यास को सदा आगे बढ़ाते, कर्म करते न्यारे और बाप के प्यारे रहना। इसको कहते हैं - 'श्रेष्ठ आत्मा'।

7.4. बैलेन्स की स्थिति

(अ) बिना कर्म के वा बिना सेवा के तो रह नहीं सकते हो और रहना भी नहीं है। क्योंकि समय कम है और सेवा अभी भी बहुत है। सेवा की रूपरेखा बदली है। लेकिन अभी भी कई आत्माओं का उल्हना रहा हुआ है। इसलिए सेवा और स्व-पुरुषार्थ दोनों का बैलेन्स रखो। ऐसे नहीं कि सेवा में बहुत बिजी थे

की सेवा समाप्त की। न्यारा-पन हर कर्म में सफलता सहज अनुभव कराता है। करके देखो। एक घण्टा किसको समझाने की भी मेहनत करके देखो और उसके अन्तर में 15 मिनट में सुनाते हुए, बोलते हुए न्यारे-पन की स्थिति में स्थित होके दूसरी आत्मा को भी न्यारे-पन की स्थिति का वायब्रेशन देकर देखो। जो 15 मिनट में सफलता होगी वह एक घण्टे में नहीं होगी। यही प्रैक्टिस ब्रह्मा बाप ने करके दिखायी। तो समझा क्या करना है?

(आ) कर्म के सम्बन्ध में आना और कर्म के बन्धन में आना – इसमें भी फ़रक है। अगर कर्म के बन्धन में आते हैं तो कर्म आपको खींचेगा, फुल स्टॉप नहीं लगाने देगा और न्यारे-प्यारे होकर किसी भी कर्म के सम्बन्ध में हो तो सेकण्ड में फुल स्टॉप लगेगा। क्योंकि बन्धन नहीं है। बन्धन भी खींचता है और सम्बन्ध भी खींचता है लेकिन न्यारे होकर सम्बन्ध में आना— यह अण्डरलाइन करना। इसी अभ्यास वाले ही पास विद् ऑनर होंगे। यह (पास विद् ऑनर होना) लास्ट कर्मार्थीत अवस्था है। बिल्कुल न्यारे होकर, अधिकारी होकर कर्म में आयें, बन्धन के वश नहीं।

(इ) एक सेकण्ड में एकदम अलग हो सकते हो? आत्मा मालिक अलग और कर्मेन्द्रियाँ कर्मचारी अलग— यह अभ्यास जब चाहो तब होना चाहिए। अच्छा, अभी-अभी एक सेकण्ड में न्यारे और बाप के प्यारे बन जाओ। पॉवरफुल अभ्यास करो— बस, मैं हूँ ही न्यारी। यह कर्मेन्द्रियाँ हमारी साथी हैं, कर्म की साथी हैं लेकिन मैं न्यारा और प्यारा हूँ। अभी एक सेकण्ड में अभ्यास दोहराओ। (ड्रिल) सहज लगता है कि मुश्किल है? सहज है तो सारे दिन में कर्म के समय यह स्मृति इमर्ज करो, तो कर्मार्थीत स्थिति का अनुभव सहज करेंगे। क्योंकि सेवा वा कर्म को छोड़ सकते हो? छोड़ेंगे क्या? करना ही है। तपस्या में बैठना— यह भी तो कर्म है।

(ई) सेवा के साधन भी भल अपनाओ। नये-नये प्लान भी भले बनाओ, लेकिन किनारों में रस्सी बाँधकर छोड़ नहीं देना। प्रवृत्ति में आते 'कमल' बनना भूल न जाना। वापिस जाने की तैयारी नहीं भूल जाना। सदा अपनी अन्तिम स्थिति

हो। शक्ति और स्नेह में समानता हो। प्यारे और न्यारेपन में समानता हो। कर्म करते हुए और कर्म से न्यारा हो अलग बैठने में स्थिति की समानता हो। जो इस समानता के बैलेन्स की कला में नम्बर जीतेगा वो महान होगा। तो दोनों कर सकते हो कि नहीं? सर्विस शुरू करेंगे तो ऊपर से नीचे आ जायेंगे? कर्म करते भी, कर्मयोगी बनते भी लवलीन हो सकते हैं, फिर तो विजयी हो जायेंगे ना! अभी प्राइज़ उसको मिलेगा जो बैलेन्स में विजयी होगा।

7.5. निमित्त भाव

सेवा के अति में नहीं जाओ। बस, मेरे को ही करनी है, मैं ही कर सकती हूँ, नहीं। कराने वाला करा रहा है, मैं निमित्त 'करनहार' हूँ। तो जिम्मेवारी होते भी थकावट कम होगी। कई बच्चे कहते हैं – बहुत सेवा की है ना तो थक गये हैं, माथा भारी हो गया है। तो माथा भारी नहीं होगा, और ही 'करावनहार' बाप बहुत अच्छा मसाज़ करेगा और माथा और ही फ्रेश हो जायेगा। थकावट नहीं होगी, एनर्जी एक्स्ट्रा (Energy extra; अतिरिक्त शक्ति) आयेगी। जब साइन्स की दवाइयों से शरीर में एनर्जी आ सकती है, तो क्या बाप की याद से आत्मा में एनर्जी नहीं आ सकती? और आत्मा में एनर्जी आयी तो शरीर में प्रभाव आटोमेटिकली (Automatically; स्वतः) पड़ता है। अनुभवी भी हो, कभी-कभी तो अनुभव होता है। फिर चलते-चलते लाइन बदली हो जाती है और पता नहीं पड़ता है। जब कोई उदासी, थकावट या माथा भारी होता है ना फिर होश आता है, क्या हुआ? क्यों हुआ? लेकिन सिर्फ एक शब्द 'करनहार' और 'करावनहार' याद करो। मुश्किल है या सहज है? बोलो हाँ जी। अच्छा।

7.6. तुरन्त फुलस्टॉप लगाने का अभ्यास

एक (1) के आगे दो बिन्दी (00) लगाओ, तीन बिन्दी (000) लगाओ, चार बिन्दी (0000) लगाओ, बढ़ता जाता है। तो आपका साधन कितना सहज है! "मैं आत्मा हूँ" – यह स्मृति की बिन्दी लगाना अर्थात् खज़ाना जमा होना। फिर "बाप" बिन्दी लगाओ और खज़ाना जमा। कर्म में, सम्बन्ध, सम्पर्क में ड्रामा

ना, इसलिए स्व-पुरुषार्थ कम हो गया। नहीं। और ही सेवा में स्व-पुरुषार्थ का अटेन्शन ज़्यादा चाहिए। क्योंकि माया को आने की मार्जिन सेवा में बहुत प्रकार से होती है। नाम सेवा, लेकिन होता है स्वार्थ। अपने को आगे बढ़ाना है, लेकिन बढ़ाते हुए बैलेन्स को नहीं भूलना है क्योंकि सेवा में ही स्वभाव, सम्बन्ध का विस्तार होता है और माया चांस भी लेती है। थोड़ा-सा बैलेन्स कम हुआ और माया नया-नया रूप धारण कर लेती है, पुराने रूप में नहीं आयेगी। नये-नये रूप में, नयी-नयी परिस्थिति के रूप में, सम्पर्क के रूप में आती है। तो अलग में सेवा को छोड़कर अगर बापदादा बिठा दे, एक मास बिठाये, 15 दिन बिठाये तो कर्मातीत हो जायेंगे? एक मास दें बस कुछ नहीं करो, बैठे रहो, तपस्या करो, खाना भी एक बार बनाओ, बस। फिर कर्मातीत बन जायेंगे? नहीं बनेंगे?

(आ) अगर बैलेन्स का अभ्यास नहीं है तो कितना भी एक मास क्या, दो मास भी बैठ जाओ लेकिन मन नहीं बैठेगा, तन बैठ जायेगा और बिठाना है मन को, न कि सिर्फ तन को। तन के साथ मन को भी बिठाना है, बैठ जाये बस बाप और मैं, दूसरा न कोई। तो एक मास ऐसी तपस्या कर सकते हो या सेवा याद आयेगी? बापदादा वा ड्रामा दिखाता रहता है कि दिन-प्रतिदिन सेवा बढ़नी ही है, तो बैठ कैसे जायेंगे? जो एक साल पहले आपकी सेवा थी और इस साल जो सेवा की, वह बढ़ी है या कम हुई है? बढ़ गयी है ना! न चाहते भी सेवा के बन्धन में बँधे हुए हो लेकिन बैलेन्स से सेवा का बन्धन, बन्धन नहीं सम्बन्ध होगा। जैसे लौकिक सम्बन्ध में समझते हो कि एक है कर्म का बन्धन और एक है सेवा का सम्बन्ध। तो बन्धन का अनुभव नहीं होगा, सेवा का स्वीट सम्बन्ध है। तो क्या अटेन्शन देंगे? सेवा और स्व-पुरुषार्थ का बैलेन्स।

(इ) ऐसे नहीं समझो कि कर्मयोगी जीवन में लवलीन अवस्था नहीं हो सकती। होती है। साथ का अनुभव अर्थात् लव का प्रैक्टिकल सबूत साथ है। तो सहजयोगी सदा के योगी हो गये ना! लवर अर्थात् सदा सहजयोगी। जो कर्म और योग, सेवा और योग, जो भी बैलेन्स की स्थिति बतायी हुई है उसको बढ़ाना। बैलेन्स का अर्थ है समानता। याद, तपस्या और सेवा— यह समानता

करूँ, यह करूँ, वह करूँ – ऐसे सोचने वाले 'साथी' के बजाय 'बाराती' बन जायेंगे। इसलिए अन्तःवाहक स्थिति अर्थात् कर्मबन्धनमुक्त कर्मातीत – ऐसी कर्मातीत स्थिति का वाहन अर्थात् अन्तिम वाहन, जिस द्वारा ही सेकण्ड में साथ में उड़ेंगे। वाहन तैयार है? वा समय को गिनती कर रहे हो? अभी यह होना है, यह होना है, उसके बाद यह होगा, ऐसे तो नहीं सोचते हो? तैयारी सब करो।

7.8. सन्तुष्टता की अवस्था

श्रेष्ठ कर्म की निशानी होगी—स्वयं सन्तुष्ट और दूसरे भी सन्तुष्ट। ऐसे नहीं, मैं तो सन्तुष्ट हूँ, दूसरे हों या नहीं हों। योगी जीवन वाले का प्रभाव स्वतः दूसरों के ऊपर पड़ेगा। अगर कोई स्वयं से असन्तुष्ट है वा और उससे असन्तुष्ट रहते हैं तो समझना चाहिये कि योगयुक्त बनने में कोई कमी है। तो सभी सन्तुष्ट रहते हो? कि अपने को खुश करते हो कि मैं बिल्कुल ठीक हूँ? अपने से सन्तुष्ट रहते हो? कि कभी कोई कमज़ोरी आती है तो असन्तुष्ट होते हो? सन्तुष्टता योगी जीवन का विशेष लक्ष्य है। तो आपके साथियों से पूछें कि सन्तुष्ट हैं या नहीं हैं? वो हाँ कहेंगे या थोड़ी शकल ऐसी करेंगे? क्योंकि योगी जीवन के तीन सर्टीफिकेट हैं: एक— स्व सन्तुष्ट, दूसरा— बाप सन्तुष्ट और तीसरा— लौकिक-अलौकिक परिवार सन्तुष्ट। तो तीनों सर्टीफिकेट हैं? कि लेना है? जैसे साइन्स के साधनों का वायुमण्डल में प्रभाव पड़ता है ना! एयरकण्डीशन चलता है तो वायुमण्डल में ठण्डाई का प्रभाव पड़ता है, ऐसे ही योगी जीवन का प्रभाव होता है। ऐसा प्रभाव है? योग माना साइलेन्स की शक्ति। इसको कहा जाता है योगी जीवन अर्थात् साइलेन्स की शक्ति वाला जीवन। तो ऐसे है कि हाँ-हाँ करते रहते हो? हर रोज़ की चेकिंग हो। चेक करेंगे तो चेंज़ होंगे। अच्छा!

का फुलस्टॉप लगाओ। बीती को फुलस्टॉप लगाया और खज़ाना बढ़ जाता। तो बताओ सारे दिन में कितने बार बिन्दी लगाते हो? और बिन्दी लगाना कितना सहज है! मुश्किल है क्या? बिन्दी खिसक जाती है क्या?

7.7. उड़ती कला की स्थिति

(अ) सभी बच्चे उड़ती कला में जा रहे हो ना! चढ़ती कला वाले तो नहीं हो ना! उड़ती कला है? 'उड़ती कला होना अर्थात् सर्व का भला होना।' जब सभी बच्चों की एकरस उड़ती कला बन जायेगी तो सर्व का भला अर्थात् परिवर्तन का कार्य सम्पन्न हो जायेगा। अभी उड़ती कला है, लेकिन उड़ती के साथ-साथ स्टेजेस (Stages; अवस्थायें) हैं। कभी बहुत अच्छी स्टेज है और कभी स्टेज के लिए पुरुषार्थ करने की स्टेज है। सदा और मैजोरटी (Majority) की उड़ती कला होना अर्थात् समाप्ति होना। अभी सभी बच्चे जानते हैं कि उड़ती कला ही श्रेष्ठ स्थिति है। उड़ती कला ही कर्मतीत स्थिति को प्राप्त करने की स्थिति है। उड़ती कला ही देह में रहते, देह से न्यारी और सदा बाप और सेवा में प्यारे-पन की स्थिति है। उड़ती कला ही विधाता और वरदाता स्टेज की स्थिति है। उड़ती कला ही चलते-फिरते फ़रिश्ता वा देवता दोनों रूप का साक्षात्कार कराने वाली स्थिति है।

(आ) जैसे आजकल के संसार में भी जब लड़ाई शुरू हो जाती है तो वहाँ के राजा हों वा प्रेजीडेन्ट (President; राष्ट्राध्यक्ष) हों उन्हीं के लिए पहले से ही देश से निकलने के साधन तैयार होते हैं। उस समय यह तैयार करो, यह ऑर्डर (Order) करने की भी मार्जिन नहीं होती। लड़ाई का इशारा मिला और भागा। नहीं तो क्या हो जाये? प्रेजीडेन्ट वा राजा के बदले जेल-बर्ड (Jail Bird; पिंजरे का पंछी) बन जायेगा। आजकल की निमित्त बनी हुई अल्प काल की अधिकारी आत्मायें भी पहले से अपनी तैयारी रखती हैं। तो आप कौन हो? इस संगमयुग के हीरो (Hero; नायक) पार्टधारी अर्थात् विशेष आत्मायें। तो आप सबकी भी पहले से तैयारी चाहिए ना? कि उस समय करेंगे? मार्जिन ही सेकण्ड की मिलनी है, फिर क्या करेंगे? सोचने की भी मार्जिन नहीं मिलनी है। करूँ, न

हुआ? विस्तार सार में समा गया ना! अपने आप से पूछो— अनेक तरफ विस्तार में भटकने वाली बुद्धि समेटने की शक्ति के आधार पर एक में एकाग्र हो गयी है? वा अभी भी कहाँ विस्तार में भटकती है? समेटने की शक्ति और समाने की शक्ति का प्रयोग किया है? या सिर्फ नालेज है? अगर इन दोनों शक्तियों को प्रयोग करना आता है तो उसकी निशानी सेकण्ड में जहाँ चाहो, जब चाहो बुद्धि उसी स्थिति में स्थित हो जायेगी। जैसे स्थूल सवारी में पॉवरफुल ब्रेक होती है तो उसी सेकण्ड में जहाँ चाहें वहाँ रोक सकते हैं। जहाँ चाहें वहाँ गाड़ी को या सवारी को उसी दिशा में ले जा सकते हैं। ऐसे स्वयं यह शक्ति अनुभव करते हो वा एकाग्र होने में समय लगता है? वा व्यर्थ से समर्थ की ओर बुद्धि को स्थित करने में मेहनत लगती है? अगर समय और मेहनत लगती है तो समझो इन दोनों शक्तियों की कमी है।

(इ) एक सेकण्ड में डॉट (बिन्दु) लगा सकते हो? अभी-अभी कर्म में और अभी-अभी कर्म से न्यारे, कर्म के सम्बन्ध से न्यारे हो सकते हो? यह एक्सरसाइज़ आती है? किसी भी कर्म में बहुत बिज़ी हो, मन-बुद्धि कर्म के सम्बन्ध में लगी हुई है, बन्धन में नहीं, सम्बन्ध में; लेकिन डायरेक्शन मिले— फुल स्टॉप, तो फुल स्टॉप लगा सकते हो? कि कर्म के संकल्प चलते रहेंगे यह करना है, यह नहीं करना है, यह ऐसे है, यह वैसे है...? तो यह प्रैक्टिस एक सेकण्ड के लिए भी करो लेकिन अभ्यास करते जाओ, क्योंकि अन्तिम सर्टीफिकेट एक सेकण्ड के फुल स्टॉप लगाने पर ही मिलना है। सेकण्ड में विस्तार को समा ले, सार स्वरूप बन जाये। तो यह प्रैक्टिस जब भी चांस मिले, कर सकते हो तो करते रहो। ऐसे नहीं, योग में बैठेंगे तो फुल स्टॉप लगेगा; हलचल में भी फुल स्टॉप। इतनी पॉवरफुल ब्रेक है? कि ब्रेक लगायेंगे यहाँ और ठहरेगी वहाँ! और समय पर फुल स्टॉप लगे, समय बीत जाने के बाद फुल स्टॉप लगाया तो उससे फ़ायदा नहीं है। सोचा और हुआ। सोचते ही नहीं रहो कि मैं शरीर नहीं आत्मा हूँ, आत्मा हूँ, मेरे को फुल स्टॉप लगाना है और कुछ नहीं सोचना है, यह सोचते भी टाइम लग जायेगा। ये सेकण्ड का फुल स्टॉप नहीं हुआ। ये अभ्यास स्वयं ही

करो। कोई को कराने की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि नये चाहे पुराने, सभी यह विधि तो जानते हैं ना! तो अभ्यास बहुत काल का चाहिये। उस समय समझो— नहीं, मैं फुल स्टॉप लगा दूँगी/दूँगा! नहीं लगेगा, यह पहले से ही समझना। उस समय, समय अनुसार कर लेंगे! नहीं, होगा ही नहीं। बहुत काल का अभ्यास काम में आयेगा। क्योंकि कनेक्शन (Connection; सम्बन्ध) है। यहाँ बहुत काल का अभ्यास बहुत काल का राज्य-भाग्य प्राप्त करायेगा। अगर अल्प काल का अभ्यास है तो प्राप्ति भी अल्प काल की होगी। तो ये अभ्यास सारे दिन में जब भी चांस मिले, करते रहो। एक सेकण्ड में कुछ बिगड़ता नहीं है। फिर काम करना शुरू कर दो। लेकिन हलचल में फुल स्टॉप लगता है या नहीं— ये चेक करो।

8.2. कन्ट्रोलिंग पॉवर

(अ) आज बापदादा ने देखा कि वर्तमान समय के अनुसार अपने ऊपर, हर कर्मेन्द्रियों के ऊपर अर्थात् स्वयं की स्वयं प्रति जो कन्ट्रोलिंग पॉवर (Controlling Power; नियन्त्रण शक्ति) होनी चाहिए वह कम है, वह और ज़्यादा चाहिए। बापदादा बच्चों की रूहरिहान सुन मुस्करा रहे थे, बच्चे कहते हैं कि पॉवरफुल (Powerful; शक्तिशाली) याद के चार घण्टे होते नहीं हैं। बापदादा ने आठ घण्टे से 4 घण्टा किया और बच्चे कहते हैं दो घण्टा ठीक है। तो बताओ कन्ट्रोलिंग पॉवर हुई? और अभी से अगर यह अभ्यास नहीं होगा तो समय पर पास विद् ऑनर, राज्य-अधिकारी कैसे बन सकेंगे? बनना तो है ना! बच्चे हँसते हैं। आज बापदादा ने बच्चों की बातें बहुत सुनी हैं। बापदादा को हँसाते भी हैं, कहते हैं ट्रैफिक कन्ट्रोल (Traffic control; मन नियन्त्रण) 3 मिनट नहीं होता, शरीर का कन्ट्रोल हो जाता है, खड़े हो जाते हैं। नाम है मन के कन्ट्रोल का, लेकिन मन का कन्ट्रोल कभी होता, कभी नहीं भी होता। कारण क्या है? कन्ट्रोलिंग पॉवर की कमी। इसे अभी और बढ़ाना है। ऑर्डर करो, जैसे हाथ को ऊपर उठाना चाहो तो उठा लेते हो। क्रेक (Crack; दरार) नहीं है तो उठा लेते हो ना! ऐसे मन, यह सूक्ष्म शक्ति कन्ट्रोल में आनी

रहे। इसमें एकरस। जो कल था उससे आज परसेन्टेज में वृद्धि का अनुभव करें— इसको कहा जाता है उड़ती कला। तो स्व-उन्नति के लिए, सेवा की उन्नति के लिए परखने की शक्ति बहुत आवश्यक है। परखने की शक्ति कमजोर होने के कारण अपनी कमजोरी को कमजोरी नहीं समझते हैं। और ही अपनी कमजोरी को छिपाने के लिए या सिद्ध करेंगे या जिद्द करेंगे। यह तो बातें छिपाने का विशेष साधन हैं। अन्दर में कमी महसूस भी होगी, लेकिन फिर भी पूरी परखने की शक्ति न होने के कारण अपने को सदा राइट और होशियार सिद्ध करेंगे। समझा ? कर्मातीत तो बनना है ना! नम्बर तो लेना है ना! इसलिए चेक करो। अच्छी तरह से योग्युक्त बन, परखने की शक्ति धारण करो। एकाग्र बुद्धि बन करके फिर चेक करो, तो जो भी सूक्ष्म कमी होगी वह स्पष्ट रूप में दिखायी देगी। ऐसा न हो जो आप समझो मैं बहुत राइट, बहुत अच्छी चल रही हूँ, कर्मातीत मैं ही बनूँगी/बनूँगा और जब समय आवे तो यह सूक्ष्म बन्धन उड़ने न देवें, अपनी तरफ खींच लेवें। फिर समय पर क्या करेंगे ? बँधा हुआ व्यक्ति अगर उड़ना चाहे तो उड़ेगा वा नीचे आ जायेगा ? तो यह सूक्ष्म बन्धन समय पर नम्बर लेने में वा साथ चलने में वा एवररेडी बनने में बन्धन न बन जाये।

9. कर्मातीत अवस्था कब बनेगी?

यहाँ अन्तिम मेला कौन-सा होगा ? संगम की बात सुनाओ। मेला अर्थात् मिलन। कर्मातीत अवस्था भी तब होगी जब पहले मेला होगा। बाप के संस्कार, बाप के गुण, बाप के कर्तव्य की स्पीड और बाप के अव्यक्त निराकारी स्थिति की स्टेज — सभी में समानता का मेला लगेगा। जब आत्मायें बाप की समानता के मेले को मनायेंगी तब जय-जयकार होगी, विनाश के समीप आयेंगे। बाप की समानता ही विनाश को समीप लायेगी। मेला लगने के बाद क्या होता है? अति शान्ति। तो आत्मायें भी मेला मनायेंगी, फिर वानप्रस्थ में चली जायेंगी। वानप्रस्थ कहो अथवा कर्मातीत कहो, लेकिन पहले यह मेला होगा। अच्छा!

10. कर्मातीत अवस्था का अनोखा दृष्टान्त और आदर्श साधक

कर्मातीत बनना ज़रूरी है। बिना कर्मातीत बनने के, साथ नहीं चलेंगे। साथ कौन जायेंगे? जो समान होंगे। ब्रह्मा बाप को देखा – कर्मातीत स्थिति को कैसे प्राप्त किया? कर्मातीत बनने का फ़ालो करना अर्थात् साथ चलने योग्य बनना।

10.1. आदिदेव ब्रह्मा

आज आलमाइटी अर्थात् बाप अपनी पहली श्रेष्ठ रचना को देख रहे हैं। पहली रचना 'ब्राह्मणों' की रचना है। उसकी पहली रचना में भी पहला नम्बर 'ब्रह्मा' को ही कहेंगे। पहली रचना का पहला नम्बर होने कारण ब्रह्मा को आदिदेव कहा जाता है। इसी नाम से इस आबू पर्वत पर यादगार भी 'आदिदेव' नाम से ही है। आदिदेव अर्थात् आदि-रचता भी कहा जाता और साथ-साथ आदिदेव अर्थात् नयी सृष्टि के आदि का पहला नम्बर का देव है। पहली देव-आत्मा श्रीकृष्ण के रूप में ब्रह्मा ही बनते हैं, इसलिए नयी सृष्टि के आदि का आदिदेव कहा जाता है। संगमयुग में भी आदि रचना का पहला नम्बर अर्थात् आदि देव कहे वा ब्राह्मण-आत्माओं के रचता ब्रह्मा कहे। तो संगम पर और सृष्टि के आदि पर दोनों समय के आदि हैं, इसलिए आदिदेव कहा जाता है।

ब्रह्मा ही आदि कर्मातीत फ़रिश्ता बनता है। ब्रह्मा सो फ़रिश्ता और फ़रिश्ता सो देवता, सब में नम्बर वन। ऐसा नम्बर वन क्यों बने? किस विधि से नम्बर वन सिद्धि को प्राप्त किया? आप सभी ब्राह्मण-आत्माओं को ब्रह्मा को ही फ़ालो (Follow; अनुसरण) करना है।

10.2. साकार ब्रह्मा

आज विश्व स्नेही बाप अपने विशेष अति स्नेही और समीप बच्चों को देख रहे हैं। स्नेही सभी बच्चे हैं, लेकिन अति स्नेही वा समीप बच्चे वही हैं जो हर क़दम में फ़ालो करने वाले हैं। निराकार बाप ने साकारी बच्चों को साकार

रूप में फ़ालो करने के लिए साकार ब्रह्मा बाप को बच्चों के आगे निमित्त रखा, जिस आदि-आत्मा ने ड्रामा में 84 जन्मों के आदि से अन्त तक अनुभव किये, साकार रूप में माध्यम बन बच्चों के आगे सहज करने के लिए एग्ज़ाम्पल (Example; आदर्श) बने। क्योंकि शक्तिशाली एग्ज़ाम्पल (Example; दृष्टान्त) को देख फ़ालो करना सहज होता है। तो स्नेही बच्चों के लिए स्नेह की निशानी बाप ने ब्रह्मा बाप को रखा और सर्व बच्चों को यही श्रेष्ठ श्रीमत दी कि हर क़दम में 'फ़ालो फ़ादर।' सभी अपने को फ़ालो फ़ादर करने वाले समीप आत्मायें समझते हो? फ़ालो करना सहज लगता या मुश्किल लगता है? ब्रह्मा बाप के विशेष क़दम क्या देखे?

सब से पहला क़दम – 'सर्वश त्यागी।' न सिर्फ तन से और लौकिक सम्बन्ध से, लेकिन सब से बड़ा त्याग, पहला त्याग – मन-बुद्धि से समर्पण अर्थात् मन-बुद्धि में हर समय बाप और श्रीमत की हर कर्म में स्मृति रही। सदा स्वयं को निमित्त समझ, हर कर्म में न्यारे और प्यारे रहे। देह के सम्बन्ध से, मैं-पन का त्याग। जब मन-बुद्धि की बाप के आगे समर्पणता हो जाती है, तो देह के सम्बन्ध स्वतः ही त्याग हो जाते हैं। तो पहला क़दम – 'सर्वश त्यागी।'

दूसरा क़दम – 'सदा आज्ञाकारी' रहे। हर समय हर एक बात में – चाहे स्व पुरुषार्थ में, चाहे यज्ञ-पालना में – निमित्त बने। क्योंकि एक ही ब्रह्मा विशेष आत्मा है जिसका ड्रामा में विचित्र पार्ट नूँधा हुआ है। एक ही आत्मा – माता भी है, पिता भी है। यज्ञ-पालना के निमित्त होते हुए भी सदा आज्ञाकारी रहे। स्थापना का कार्य विशाल होते हुए भी किसी भी आज्ञा का उल्लंघन नहीं किया। हर समय 'जी हाज़िर' का प्रत्यक्ष स्वरूप सहज रूप में देखा।

तीसरा क़दम – हर संकल्प में भी वफ़ादार। जैसे पतिव्रता नारी एक पति के बिना और किसी को स्वप्न में भी याद नहीं कर सकती, ऐसे हर समय 'एक बाप दूसरा न कोई' – यह वफ़ादारी का प्रत्यक्ष स्वरूप देखा। विशाल, नयी स्थापना की ज़िम्मेवारी के निमित्त होते भी वफ़ादारी के बल से, एक बल एक भरोसे के प्रत्यक्ष कर्म में हर परिस्थिति को सहज पार किया और कराया।

चौथा क़दम – विश्व-सेवाधारी। सेवा की विशेषता – एक तरफ़ अति निर्मान वर्ल्ड सर्वेन्ट (World Servant; विश्व-सेवाधारी); दूसरे तरफ़ ज्ञान की अथार्टी। जितना ही निर्मान उतना ही बेपरवाह बादशाह! सत्यता की निर्भयता—यही सेवा की विशेषता है। कितना भी सम्बन्धियों ने, राज-नेताओं ने, धर्म-नेताओं ने नये ज्ञान के कारण ऑपोजीशन (Opposition; विरोध) किया लेकिन सत्यता और निर्भयता की पोजीशन (Position; अटल स्थिति) से ज़रा भी हिला न सके। इसको कहते हैं 'निर्मानता और अथार्टी का बैलेन्स।' इसकी रिज़ल्ट (Result; परिणाम) आप सभी देख रहे हो। गाली देने वाले भी मन से आगे झुक रहे हैं। सेवा की सफलता का विशेष आधार निर्मान-भाव, निमित्त-भाव, बेहद का भाव। इसी विधि से ही सिद्धि-स्वरूप बने।

पाँचवा क़दम – कर्मबन्धन मुक्त, कर्म-सम्बन्ध मुक्त अर्थात् शरीर के बन्धन से मुक्त फ़रिश्ता अर्थात् कर्मातीत। सेकण्ड में नष्टोमोहा स्मृतिस्वरूप, समीप और समान।

तो आज विशेष संक्षेप में पाँच क़दम सुनाये। विस्तार तो बहुत है लेकिन सार रूप में इन पाँच क़दमों के ऊपर क़दम उठाने वाले को ही फ़ालो फ़ादर कहा जाता है। अभी अपने से पूछो – कितने क़दमों में फ़ालो किया है?

10.3. अव्यक्त ब्रह्मा

बापदादा विदेशी अर्थात् विश्व-कल्याण करने के निमित्त बनने वाले बच्चों को यही कहते हैं कि अब सेवा और विदेही अवस्था में नम्बर वन विदेशी बच्चों को बनना ही है। कब? कब नहीं, अब। अव्यक्त बाप की पालना का प्रत्यक्ष सबूत देना है। जैसे ब्रह्मा बाप अव्यक्त बन विदेही स्थिति द्वारा कर्मातीत बने, तो अव्यक्त ब्रह्मा की विशेष पालना के पात्र हो इसलिए अव्यक्त पालना का बाप को रेसपाण्ड (Respond) देना— विदेही बनने का, सेवा और स्थिति के बैलेन्स का। ठीक है? मंज़ूर है? करना ही है। बापदादा यह नहीं सोचते – देखेंगे, सोचेंगे। नहीं। करना ही है।